



भारतश्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

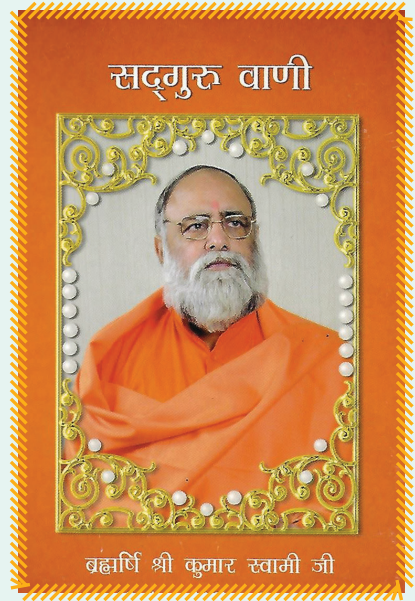
सोमवार, 01 दिसंबर 2025 • वर्ष 7 • अंक 20 • मूल्य: 5 रुपए

क्या तय होगा विराट-रोहित का सफर?



अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में
गूंगा जगदुरु कुमार स्वामी जी
का संदेश

पेज-10-11



कागज को सीने ला मैने आज समेटा
पैमाना। ढूँढ-ढूँढ शब्दों की मदिरा सेवन
करता दीवाना। शुद्ध-अशुद्ध कलुषित भाषा
ही साकी है मदिरालय की, विश्व समर्पित
करता तुमको काव्य रचना।

चिरंजीव हो मादक मदिरा जिसमें छलके
पैमाना। चिरंजीव हो प्रेरक जिसने मुझे
बनाया दीवाना। चिरंजीव हो साकी मेरा
मुझ को मय देने वाला, चिरंजीव हो पीने
वाला चिरंजीव हो।

स्वर्ण शिखर की छाया में उमड़ा आस्था का सागर

राम मंदिर में चार दिनों
में करीब पांच लाख
भक्त, धर्मध्वजा के
दर्शन को लंबी कतारें

@ भारतश्री ब्यूरो

अयोध्या इन दिनों सिर्फ एक शहर नहीं, एक धड़कन की तरह धड़क रही है। जैसे-जैसे सुबह होती है, सरयू की ठंडी हवा के साथ मंदिर के घंटों की ध्वनि शहर पर फैलने लगती है और भक्तों की भीड़ उस ओर कूच करती है जहां रामलला का भव्य-दिव्य मंदिर अपनी पूरी गरिमा में सिर उठाए खड़ा है। राम जन्मभूमि पर बने इस मंदिर की पूर्णता ने अयोध्या का रूप बदल दिया है, लेकिन असली आकर्षण इन दिनों वह स्वर्णमंडित मुख्य शिखर है, जिसके ऊपर 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धर्म ध्वजा फहराई थी। यह दृश्य इतना अद्भुत था कि जिसने नज़दीक से देखा, उसके लिए एक जीवन-स्मृति बन गया, और जिसने इंटरनेट पर देखा, उसने भी दिल से प्रणाम किया।

आज भी मंदिर पहुंचने वाला हर भक्त प्रांगण के भीतर कदम रखते ही सबसे पहले ऊपर नजर उठाता है स्वर्ण शिखर की ओर, जहां सूर्य की रोशनी सोने पर गिरकर ऐसा चमकती है मानो आस्था की कोई अग्नि फूट रही हो।

ध्वजारोहण के अगले ही दिन से अयोध्या में आस्था का मेला

ध्वजारोहण का समारोह इतना महत्वपूर्ण और विशाल था कि उस दिन आम दर्शन रोक दिए गए थे। लेकिन जैसे ही अगले दिन सुबह के दर्शन शुरू हुए, अयोध्या की गलियों में भक्तों की कतारें मानो अनंत तक फैल गईं।

26 नवंबर को अकेले एक ही दिन में एक लाख 90 हजार 630 भक्तों ने रामलला और स्वर्ण शिखर का दर्शन किया। उस दिन किसी भी पास के माध्यम से खास लोगों को प्रवेश नहीं मिला—पूरा दिन सिर्फ आम भक्तों का था, और उन्हीं की आस्था ने मंदिर परिसर को जैसे जगमगा दिया।

स्वर्ण शिखर पर लहराती पताका जैसे एक-एक भक्त को अपनी ओर खींच रही थी। लोग मंदिर में प्रवेश करते



नहीं दिख रहे थे, बल्कि ऐसा लगता था कि वे किसी अज्ञात शक्ति द्वारा धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ाए जा रहे हों जहां आस्था और भव्यता एक-दूसरे को आलिंगन कर रही हैं।

अगले दिन भी भीड़ थमने का नाम नहीं लेती

27 नवंबर को जैसे अयोध्या ने दूसरी सांस भरकर फिर से स्वागत किया। उस दिन एक लाख 20 हजार से अधिक भक्तों ने दर्शन किए। हर चेहरा संतोष से भरा हुआ था। हर आंख में चमक थी, और हर माथे पर यही भाव—कि आज जीवन सफल हो गया।

28 नवंबर की सुबह भी कुछ अलग नहीं थी। इस दिन 82 हजार 530 भक्तों ने मंदिर के दर्शन किए। यह संख्या बताती है कि अयोध्या सिर्फ आस्था का स्थान नहीं है, बल्कि एक भावावेश है, एक ऐसी अनुभूति है जो लोगों को बार-बार अपनी ओर खींच रही है।

चौथे दिन भी थमी नहीं श्रद्धा की लहर

ध्वजारोहण के चौथे दिन यानी शनिवार को भी अयोध्या देर शाम तक श्रद्धालुओं की आवाजाही से भरी रही। लगभग 90 हजार भक्तों ने उस दिन मंदिर पहुंचकर स्वर्ण शिखर और रामलला के दर्शन किए। शाम ढलने तक गलियों में भीड़ थी, मंदिर प्रांगण में भजन गूंज रहे थे और लोगों के चेहरे पर एक अजीब-सी शांति थी।

यह वह शांति है जो सिर्फ दर्शन से मिलती है। एक ऐसी अनुभूति, जो शब्दों में पूरी तरह समा नहीं सकती।

पांच दिनों में लगभग 4 लाख 83 हजार भक्त मंदिर पहुंचे

अधिकारियों का कहना है कि 25 नवंबर से 29 नवंबर तक करीब 4 लाख 83 हजार भक्तों ने राम जन्मभूमि मंदिर में प्रवेश किया। यह संख्या अयोध्या के इतिहास में अभूतपूर्व कही जा सकती है।

रामलला के दर्शन के साथ ही लोग स्वर्ण शिखर के सामने खड़े होकर एक पल के लिए आकाश की ओर देखते हैं और फिर हाथ जोड़कर प्रणाम करते हैं। ऐसा लगता है मानो ध्वजा की हर लहर आस्था का संदेश दे रही हो और स्वर्ण शिखर हर भक्त के मन पर रोशनी की कोई धार गिरा रहा हो।

धर्मध्वजा का चमत्कार

मंदिर प्रांगण में प्रवेश करते ही एक बात साफ दिखाई देती है किसी भक्त की दृष्टि पहले रामलला पर नहीं जाती, बल्कि ऊपर झूलती उस स्वर्णमयी ध्वजा पर जाती है जो शिखर पर लहरा रही है। लोग कहते हैं कि ध्वजा सिर्फ एक प्रतीक नहीं, बल्कि विजय, संकल्प और सनातन संस्कृति का स्वरूप है। ध्वजा को देखे बिना किसी का मंदिर में कदम बढ़ाना मानो अधूरा सा लगता है। कई भक्तों ने बताया कि जब वे मंदिर में प्रवेश करते हैं, तो शिखर की चमक उन्हें कुछ पल के लिए थमा देती है। यह दृश्य ठीक उसी तरह अचानक मन में घर कर जाता है, जैसे किसी लंबे इंतजार का अंत मिल गया हो।



ORDER ALL TYPES OF :



- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली की हवा मर्यादा पार कर गई

सांसें भारी, आसमान धुंधला, राजधानी में फिर गंभीर प्रदूषण

@ शोभित यादव

दिल्ली की हवा का रंग इन दिनों फिर उदास हो गया है। मंगलवार शाम तक शहर का आसमान मानो धुएं और धूल के महीन परदे में छिप गया। हवा का हर झोंका ऐसा लग रहा था, जैसे वह सांसों में घुलने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें भारी करने के लिए बह रहा हो। पिछले दो दिनों में हवा की गुणवत्ता इतनी तेजी से गिरी कि लोग अंदाजा ही नहीं लगा पाए कि यह ठंड नहीं, प्रदूषण है जो दिल्ली की फिजा को खामोश दुश्मन की तरह जकड़ता जा रहा है।

मंगलवार सुबह दिल्ली का एयर क्वालिटी इंडेक्स 340 था, जो सोमवार को 301 था। यह बढ़ोतरी अपने आप में चिंताजनक थी, लेकिन शाम तक हवा ने एक और खतरनाक छलांग लगा दी। एक्वआई 372 दर्ज हुआ, और राजधानी फिर से 'गंभीर' श्रेणी में पहुंच गई। शहर के 15 से अधिक इलाकों ने 400 से ऊपर का स्तर छुआ, जो स्वास्थ्य के लिहाज से बेहद खतरनाक है। बुराड़ी, आनंद विहार, विवेक विहार, पंजाबी बाग, रोहिणी, मुंडका और कई दूसरे इलाकों में ऐसा महसूस हुआ कि हवा चल नहीं रही, बल्कि दीवार बनकर खड़ी हो गई है।

हवा की इस स्थिति को समझने के लिए एक्वआई पैमाना बेहद महत्वपूर्ण है। 0 से 50 तक की हवा को अच्छा माना जाता है, 51 से 100 संतोषजनक, 101 से 200 मध्यम और 201 से 300 खराब। लेकिन 301 से 400 पहुंचते ही हवा बहुत खराब मानी जाती है और 401 से 500 गंभीर स्तर होता है, जहां हवा किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिए भी नुकसानदेह हो जाती है। दिल्ली की हवा लगातार इस खतरनाक दायरे में झूल रही है और इसके संकेत साफ हैं कि अगले कुछ दिनों में राहत संभव नहीं है। मौसम विभाग ने रात के समय घनी धुंध रहने का अनुमान जताया है। हवा की रफ्तार बहुत कम



रहेगी, जिससे प्रदूषण जमीन के करीब ही अटका रहेगा। दोपहर में भी हवा मुश्किल से पांच किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चलेगी और शाम होते-होते धीरे-धीरे यह भी भारी हो जाएगी। प्रदूषण बढ़ने के कारणों पर नजर डालें तो सबसे बड़ा बोझ

दिल्ली की सड़कों पर दौड़ते वाहन डाल रहे हैं। मंगलवार को परिवहन क्षेत्र का योगदान 18.4 प्रतिशत रहा, जो अपने आप में बहुत बड़ा हिस्सा है। उद्योगों की हिस्सेदारी 9.2 प्रतिशत दर्ज की गई। इसके साथ ही पड़ोसी शहरों का प्रदूषण भी दिल्ली की हवा को और खराब कर रहा है। नोएडा, गाजियाबाद, बागपत, पानीपत और गुरुग्राम से आने वाला धुआं दिल्ली के वातावरण में मिलकर उसे और भारी बना रहा है। एक तरह से देखा जाए तो दिल्ली सिर्फ अपने प्रदूषण की जिम्मेदार नहीं है, बल्कि आसपास के पूरे क्षेत्र की हवा यहां आकर जमा होती है और

शहर को सामूहिक रूप से प्रभावित करती है।

इस बीच, दिल्ली नगर निगम ने मंगलवार को प्रदूषण नियंत्रण के लिए कई उपायों को मंजूरी दी। महापौर राजा इकबाल

सिंह ने अधिकारियों को निर्देश

दिया कि हवा और धूल प्रदूषण के खिलाफ सख्त, समयबद्ध और परिणाम देने वाले कदम उठाए जाएं। करीब चार घंटे चली बैठक में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के पार्षदों ने शहर की बिगड़ती हवा को गंभीर बताया और इस चुनौती से निपटने के लिए व्यावहारिक सुझाव साझा किए। यह स्पष्ट था कि दिल्ली की हवा को एकजुटा और सख्ती दोनों की जरूरत है।

दिल्ली का मौसम भी इन दिनों कुछ ऐसा है, जो प्रदूषण को और बढ़ा देता है। मंगलवार को अधिकतम तापमान 25.8 डिग्री रहा, जबकि न्यूनतम तापमान 9.6

डिग्री सेल्सियस दर्ज हुआ। हल्की ठंड, कोहरा और धीमी हवा मिलकर प्रदूषण को जमीन पर ही थाम लेती है। बुधवार के लिए मौसम विभाग ने फिर कोहरे का अनुमान जताया है, और तापमान 24 और 8 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की उम्मीद है। यानी हालात में कोई बड़ी राहत तुरंत नजर नहीं आती।

दिल्ली के निवासियों के लिए यह हवा सिर्फ आंकाड़ों का खेल नहीं है। यह वह सच्चाई है जो सुबह की पहली सांस से लेकर रात के आखिरी पल तक साथ रहती है। बच्चे स्कूल जाते समय खांसी रोकते हैं, बुजुर्ग छत पर टहलने से डरते हैं और कामकाजी लोग मास्क को नए सामान्य की तरह अपनाने लगे हैं। डॉक्टर लगातार सलाह दे रहे हैं कि ऐसी हवा फेफड़ों, हृदय, आंखों और त्वचा पर सीधा असर डालती है। यह सिर्फ अस्थमा या एलर्जी वाले मरीजों के लिए नहीं, बल्कि हर व्यक्ति के लिए खतरा है।

दिल्ली की हवा हमेशा से सर्दियों में खराब होती आई है। लेकिन जिस तेजी से प्रदूषण बढ़ रहा है, वह चिंता को और गहरा कर देता है। यह सिर्फ मौसम या किसी एक स्रोत का मसला नहीं है; यह पूरे शहरी तंत्र की समस्या है। सड़कें, उद्योग, निर्माण, ट्रैफिक और आसपास के शहर ये सभी मिलकर दिल्ली की हवा को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। सरकारें अलर्ट हैं, विभाग सक्रिय हैं, मीटिंगें हो रही हैं, लेकिन जमीन पर बदलाव जितना चाहिए, उतना तेज नहीं दिखता।

दिल्ली आज एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां हवा केवल खराब नहीं, बीमार हो चुकी है। और जब हवा बीमार हो जाए, तो शहर स्वस्थ कैसे रह सकता है? सर्दियों के इस मौसम में दिल्ली की सांसें को राहत कब मिलेगी, यह कहना मुश्किल है। लोगों की उम्मीदें मौसम की करवट और सरकारी कदमों की तेजी पर टिकी हैं। पर फिलहाल दिल्ली को उस हवा के साए में जीना पड़ रहा है, जो हर सांस के साथ उसे चेतावनी दे रही है—कि अब बदलाव सिर्फ जरूरी नहीं, अनिवार्य हो चुका है।



नांदेड़ की दर्दमयी दास्ताँ

▶▶ तीन साल का प्यार, एक रात में बदल गई जिंदगी ▶▶ हत्या के बाद प्रेमिका ने दी अपनी अलग कसौटी

@ रिकू विश्वकर्मा

नांदेड़ की एक गली में एक युवा जीवन गुजर गया। उसकी मौत ने न केवल एक परिवार को तोड़ा बल्कि समाज के कई सवाल उड़ा दिए। यह कहानी है आंचल मामीडकर और सक्षम गौतम की। तीन साल की दोस्ती और प्यार कैसी मुश्किलों से गुजरी, क्या वजह बनी उस रात होने वाली बर्बर घटना की, और कैसे एक लड़की ने अपनी मर्जी से एक ऐसा कदम उठाया कि हर तरफ चर्चा छा गई, यह सब पीड़ितों के बयान, पड़ोसियों की बातें और पुलिस की जांच में उभरकर आ रहा है।

आंचल और सक्षम का रिश्ता

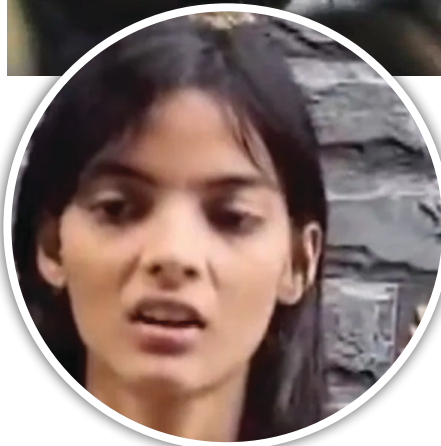
आंचल मामीडकर 19 साल की है और नांदेड़ की रहने वाली है। वह पद्मशाली समुदाय से आती है, जिसे श्रेणी में स्पेशल बैकवर्ड क्लास माना जाता है। सक्षम गौतम उसी शहर का रहने वाला था और उनके परिवार बौद्ध धर्म मानते हैं। दोनों की पहचान और पृष्ठभूमि अलग थे। फिर भी तीन साल पहले इंटरनेट पर शुरू हुई दोस्ती धीरे-धीरे प्यार में बदल गई। आंचल बताती है कि वे दोनों सालों तक छुपकर मिले, फोन पर बातें हुईं और कभी-कभी सक्षम उनके घर भी आता था। सक्षम के घर पर उनकी मौजूदगी पर भी दोनों परिवारों के मन में खटास थी। सक्षम के माता-पिता और आंचल दोनों के कहने पर दोनों के बीच संबंधों की जानकारी आसपास के लोगों तक पहुंची थी।

सुलगते रिश्ते और धमकियाँ

आंचल की दास्तान दुख और दबाव से भरी है। वह कहती है कि उसके पिता और भाइयों ने कई बार सक्षम को धमकी दी थी। परिवार के लोग रिश्ते को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। आंचल के पिता गजानन पर पहले से हिंसा, धमकी और अन्य अपराधों से जुड़े दर्जनों मामले दर्ज थे। पुलिस रिकॉर्ड में पिता पर दस मामले दर्ज बताए गए हैं। भाइयों के खिलाफ भी कई मामले दर्ज हैं। इन पारिवारिक पृष्ठभूमियों ने रिश्ते पर सायास तनाव बनाये रखा। आंचल बताती है कि परिवार ने सक्षम से कहा था कि यदि वह धर्म बदल ले तो शादी करवा देंगे। सक्षम ने कथित तौर पर यह प्रस्ताव मंजूर करने को कहा था। बावजूद इसके भरोसे के बीच भी माहौल तनावपूर्ण रहा। एक महीने पहले भी सक्षम पर जान से मारने की धमकी दी गई थी और पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई थी।

खबरों ने पत्थर की तरह गिरा दी दुनिया

27 नवंबर की शाम को घटनास्थल से एक परेशान करने वाली खबर आई। सक्षम पर हमला हुआ। सक्षम की मां संगीता गौतम का कहना है कि शाम के समय उनके पास एक रिश्तेदार का फोन आया। वे जब मौके पर पहुंचे तो सड़क पर सक्षम पड़ा मिल गया। उसके शरीर पर गंभीर चोटें और गोली लगने के निशान थे। पास मिली तस्वीरें और गवाहों के बयानों के अनुसार वहां बुलेट के खोखे और खून लगे पत्थर भी पाए गए। पुलिस के शुरुआती दावे के मुताबिक सक्षम को पीट-पीटकर और गोली मारकर



उसकी हत्या की गई। घटना की खबर फैलते ही माहौल गरम गया। सक्षम के अंतिम संस्कार की तैयारी चल रही थी जब आंचल अचानक अपने घर से निकल पड़ी। पिता की गिरफ्तारी की खबर सुनकर उसने अपना घर छोड़ने का फैसला कर लिया। उस शाम आंचल सीधे सक्षम के घर पहुंची और सक्षम की माँ से कहा कि अब वह अपने घर नहीं लौटेगी। वह सक्षम से प्यार करती थी और अब वह उसी के साथ रहेगी।

आंचल का बयान और वायरल वीडियो

आंचल ने एक साहसिक बयान दिया—वह सक्षम की देह के साथ 'शादी' करने की घोषणा कर चुकी है। इस कदम से इलाके में हड़कंप मच गया। आंचल ने कहा कि यह उसका स्वतंत्र निर्णय है। वह बालिंग है और अपने मन से यह कर रही है। उसने सक्षम की मृत्यु के बाद सक्षम के घर में रहना ही चुन लिया। सोशल मीडिया पर इसका वीडियो भी वायरल हुआ। आंचल का कहना है कि capable के घरवालों ने उसे पूरा अधिकार देकर ही यह निर्णय लेने दिया और उसे सक्षम की 'बहन' या 'पत्नी' का दर्जा निभाने का इरादा है। वह बार-बार दोहराती है कि उसके निर्णय में कोई दबाव नहीं है और इस फैसले के पीछे सिर्फ उसका प्यार है।

आरोपी कौन-कौन हैं?

पुलिस ने मामले में सख्ती दिखाई है। अब तक छह लोगों के विरुद्ध आरोप जताये गए हैं। इनमें आंचल की मां जयश्री, पिता गजानन, भाई साहिल, नाबालिंग भाई और दो रिश्तेदार सोमेश व वेदांत शामिल हैं। पुलिस की शुरुआती

बताया कि आंचल के भाई और पिता अक्सर सक्षम को धमकाया करते थे और सक्षम पर आरोप लगाये जाते थे। लेन-देन या किसी व्यक्तिगत झगड़े की भी बातें उजागर हुईं लेकिन पुलिस ने अभी तक किसी को दोषी साबित नहीं किया है।

प्रेम बनाम जाति और सुरक्षा

यह केस केवल एक हत्या का मामला नहीं रह जाता। यह सवाल उठता है कि आखिर प्रेम-विवाह के मामलों में अब भी किन कारकों से रिश्तों को खतरा है। जातिगत भेदभाव, परिवार का दबाव और हिंसा की आशंका—ये तीनों मिलकर रिश्तों को हाशिये पर धकेल देते हैं। आंचल के शब्दों में दर्द साफ नज़र आता है—मेरे परिवार ने हमें धोखा दिया। उसकी दुखभरी आवाज़ में यह पीड़ा सुनाई देती है कि प्यार और समर्पण का अंत कैसे हिंसा में बदल गया। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे मामलों में सामाजिक संरचना, महिला-सुरक्षा और स्थानीय पुलिसिंग का रोल अहम होता है। घटना ने यह भी दिखाया कि शिकायत दर्ज होने के बाद भी यदि सुरक्षा न मिले तो परिणाम घातक हो सकते हैं।

परिवार, समुदाय और प्रशासन कौन लेगा जिम्मेदारी?

मर्डर के मामले में पुलिस ने FIR दर्ज कर आरोपियों की पहचान के साथ करवाई शुरू कर दी है। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य एकत्रित किये हैं। मोबाइल कॉल रिकॉर्ड्स, CCTV फुटेज और गवाहों के बयानों के आधार पर मामले की तह में जाया जा रहा है। डिप्टी SP ने कहा है कि सभी पहलुओं की जांच हो रही है और जो भी दोषी होगा उसे कानून के अनुसार सजा मिलेगी। कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि परिवार, समुदाय और प्रशासन तीनों को जिम्मेदारी लेनी होगी। विशेष रूप से लड़कियों के मामले में जहां पारिवारिक दबाव, धमकी या हिंसा का खतरा हो, वहां त्वरित सुरक्षा और संरक्षण आवश्यक है।

सक्षम ने धर्म बदलने को भी कहा था

आंचल बार-बार कहती है कि सक्षम ने धर्म बदलने को भी कहा था ताकि वे शादी कर सकें। वह यह भी कहती है कि सक्षम के साथ उसने अपनी जिंदगी का फैसला लिया है और अब वह उसी के परिवार के साथ रहेगी। यह बयान एक युवा मन की विकृता और पीड़ा का आईना है। समाज के लिये यह चुनौती है कि आखिर कैसे युवा-युवा संबंधों को सहारा और सुरक्षा दें ताकि उनके रिश्ते हिंसा का शिकार न बनें। पुलिस का फर्ज है कि वह निष्पक्ष और तेज़ जांच करे। न्यायपालिका का काम है कि साक्ष्यों के आधार पर त्वरित सुनवाई हो। और समाज का कर्तव्य यह है कि किसी भी प्रेम की कहानी को खून से न गढ़े। नांदेड़ की यह घटना प्यार और हिंसा के बीच की रेखा को हमारी आँखों के सामने खींच कर रख देती है। एक तरफ सक्षम की मर्ची मौत ने परिवारों पर गहरे निशान छोड़े हैं। दूसरी तरफ आंचल का दर्द और उसके फैसले ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि हम युवा-महिला सुरक्षा और प्रेम के अधिकार को किस हद तक मानते हैं।

नए लेबर कोड्स के खिलाफ देशभर में आंदोलन: मजदूरों की एकजुट आवाज विरोध की लहर: 26 नवंबर को सड़कों पर उतरे लाखों मजदूर

देशभर में 26 नवंबर को एक बड़ा आंदोलन हुआ। दस बड़े ट्रेड यूनियनों ने मिलकर विरोध प्रदर्शन किया। ये यूनियनें नए चार श्रम संहिताओं के खिलाफ थीं। मजदूरों ने दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और दूसरे शहरों में मार्च निकाले। उन्होंने मीटिंग्स कीं और नारेबाजी की। किसान संगठन और बिजली क्षेत्र के कर्मचारी भी शामिल हुए। सबका कहना था कि ये संहिताएं कंपनियों को फायदा पहुंचाती हैं, जबकि मजदूरों के हक छीनती हैं। यूनियनों ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को ज्ञापन भेजा। उन्होंने मांग की कि इन संहिताओं को वापस लिया जाए। प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहे, लेकिन मजदूरों का गुस्सा साफ दिखता। ये पहला बड़ा विरोध था जब सरकार ने 21 नवंबर को ये संहिताएं लागू कीं। पहले 29 पुरानी कानूनों को मिलाकर ये चार बने हैं। मजदूरों का कहना है कि सरकार ने बिना बातचीत के ये फैसला लिया। इससे नौकरियों पर खतरा बढ़ गया है। लाखों अनौपचारिक क्षेत्र के लोग प्रभावित होंगे। ये आंदोलन सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं रहा। गांवों में भी किसानों ने समर्थन दिया। यूनियन लीडर्स ने कहा कि ये लड़ाई जारी रहेगी। सरकार को मजदूरों की सुननी होगी। ये प्रदर्शन देश की अर्थव्यवस्था पर असर डाल सकते हैं। क्योंकि मजदूर ही तो सब कुछ चलाते हैं। अब सवाल ये है कि सरकार कैसे जवाब देगी। ये घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि विकास किसके लिए हो रहा है। क्या अमीर-गरीब की खाई और चौड़ी होगी? मजदूरों की आवाज दबेगी या सुनी जाएगी? ये समय बदलाव का है, लेकिन बदलाव सबके हित में होना चाहिए। प्रदर्शन के दौरान कोई हिंसा नहीं हुई, जो अच्छी बात है। लेकिन मजदूरों की चिंताएं गंभीर हैं। वे चाहते हैं कि उनकी बात सुनी जाए। ये आंदोलन एक संकेत है कि श्रमिकों को हाशिए पर नहीं छोड़ा जा सकता।

संहिताओं का नया चेहरा: क्या सुधार या जाल?

नए श्रम संहिताओं में कई बदलाव हैं। ये चार हैं: वेतन संहिता, औद्योगिक संबंध संहिता, सामाजिक सुरक्षा संहिता और व्यावसायिक सुरक्षा संहिता। सरकार कहती है कि ये पुराने 29 कानूनों को सरल बनाती हैं। अब कंपनियां आसानी से कर्मचारियों को रख और निकाल सकेंगी। न्यूनतम मजदूरी और सामाजिक सुरक्षा के प्रावधान हैं। लेकिन यूनियनें कहती हैं कि ये मजदूरों को कमजोर करती हैं। स्ट्राइक करने का हक कम हो गया है। ठेके पर काम करने वाले ज्यादा होंगे। इससे स्थायी नौकरियां घटेंगी। कंपनियों को फायदा होगा, लेकिन मजदूरों की सौदेबाजी की ताकत कम होगी। अनौपचारिक क्षेत्र में करोड़ों लोग हैं, जो सबसे ज्यादा प्रभावित होंगे। ये संहिताएं लागू होने से उद्योग तेजी से बढ़ेंगे, लेकिन क्या ये समान विकास लाएंगी? सरकार का दावा है कि ये आधुनिक बनाती हैं। लेकिन आलोचक कहते हैं कि ये कॉर्पोरेट्स के हित में हैं। पहले पांच सालों में कई विरोध हुए, लेकिन ये सबसे बड़ा है। संहिताओं में स्वास्थ्य बीमा और पेंशन जैसे फायदे हैं। लेकिन यूनियनें कहती हैं कि इन्हें लागू करने



मजदूरों की परेशानी: नौकरी और हक पर संकट

मजदूरों को डर है कि ये संहिताएं उनकी जिंदगी बिगाड़ देंगी। अनौपचारिक क्षेत्र में 90 प्रतिशत से ज्यादा लोग हैं। वे बिना सुरक्षा के काम करते हैं। नए नियमों से ठेके बढ़ेंगे। स्थायी नौकरियां कम होंगी। स्ट्राइक का अधिकार कमजोर पड़ेगा। यूनियनें कहती हैं कि ये कॉर्पोरेट्स को ताकत देती हैं। मजदूरों की सौदेबाजी खत्म हो जाएगी। छोटे शहरों में फैक्ट्रियां बंद हो सकती हैं। परिवारों पर असर पड़ेगा। महिलाओं और युवाओं को ज्यादा नुकसान। ये संहिताएं अमीर-गरीब की खाई बढ़ाएंगी। समान विकास का सपना टूटेगा। मजदूरों ने कहा कि वे कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन फायदा कहां? अब आवाज उठानी पड़ेगी। प्रदर्शन में हजारों शामिल हुए। वे चाहते हैं कि पुराने कानून वापस आएं। लेकिन सरकार सुन रही है या नहीं? ये सवाल गंभीर है। अनौपचारिक मजदूरों को पेंशन मिलेगी, लेकिन कैसे? संसाधन कम हैं। ये चिंताएं जायज हैं। रुमें सोचना चाहिए कि विकास सबके लिए हो। मजदूर बिना हक के कैसे आगे बढ़ें? ये आंदोलन एक सबक है। समाज को एकजुट होना होगा। यूनियनें और सरकार के बीच पुल बनाना जरूरी। अन्यथा टकराव बढ़ेगा। मजदूरों की कलानी सुननी होगी। वे देश की रीढ़ हैं। उनकी परेशानी हमारी है।

के लिए संसाधन कहां से आएंगे? छोटी कंपनियां तो इन्हें नजरअंदाज कर देंगी। ये बदलाव अर्थव्यवस्था को मजबूत करेंगे, लेकिन मजदूरों को सुरक्षा की जरूरत है। क्या ये संतुलन बन पाएगा? हमें सोचना होगा कि कानून सबके लिए बराबर हों। ये सुधार जरूरी थे, लेकिन तरीका गलत था। बिना यूनियनों से बात किए लागू करना ठीक नहीं। अब देखना ये है कि कोर्ट क्या कहता है। कई संगठन कानूनी लड़ाई लड़ने की बात कर रहे हैं। ये संहिताएं भारत के श्रम बाजार को बदल देंगी। लेकिन बदलाव में सबकी भागीदारी होनी चाहिए। अन्यथा असंतोष बढ़ेगा।

सरकार की राय: विकास के लिए जरूरी कदम

सरकार का कहना है कि ये श्रम संहिताएं देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये पुरानी और जटिल कानूनों को सरल बनाती हैं। अब कंपनियां आसानी से निवेश करेंगी। इससे नई नौकरियां पैदा होंगी। श्रम मंत्री ने कहा कि सामाजिक सुरक्षा मजबूत होगी। हर मजदूर को

न्यूनतम वेतन और बीमा मिलेगा। सरकार ने 90 दिनों में ये दूसरा बड़ा सुधार किया। इससे अर्थव्यवस्था तेज चलेगी। विरोधियों को जवाब देते हुए कहा गया कि ये मजदूरों के हित में हैं। हायरिंग आसान होगी, लेकिन फायरिंग के नियम सख्त हैं। यूनियनों से बातचीत हुई थी, लेकिन अंतिम फैसला सरकार का था। अब लागू करने के बाद फीडबैक लेंगे। सरकार का मानना है कि ये वैश्विक स्तर पर भारत को प्रतिस्पर्धी बनाएंगी। छोटे उद्योगों को राहत मिलेगी। लेकिन आलोचना पर कहा कि ये भ्रम फैलाने की कोशिश है। वास्तव में, ये कोड्स मजदूरों को ज्यादा सुरक्षा देते हैं। पेंशन स्कीम बढ़ेगी। ग्रेज्युटी के नियम बेहतर होंगे। सरकार ने कहा कि विरोध राजनीतिक है। लेकिन सुधार जरूरी हैं। पिछले सालों में कई देरी हुई। अब समय आ गया है। ये कदम समावेशी विकास लाएंगे। अनौपचारिक क्षेत्र को औपचारिक बनाएंगे। लेकिन क्या ये वादे पूरे होंगे? हमें देखना होगा। सरकार का पक्ष समझना जरूरी है। विकास के बिना नौकरियां नहीं आएंगी। लेकिन मजदूरों की चिंताओं को नजरअंदाज नहीं कर सकते। संतुलन

बनाना होगा। ये सुधार बहस छेड़ेंगे। क्या ये सही दिशा में हैं? समय बताएगा। लेकिन सरकार को यूनियनों से फिर बात करनी चाहिए। इससे विश्वास बनेगा।

भविष्य की चुनौती: संवाद से समाधान?

अब सवाल ये है कि आगे क्या होगा। यूनियनें और विरोध जारी रखेंगी। शायद हड़तालें होंगी। सरकार को संवाद करना होगा। कोर्ट में केस हो सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय संगठन भी नजर रख रहे हैं। ये सुधार भारत के श्रम बाजार को बदल देंगे। लेकिन बदलाव में समावेश हो। अनौपचारिक क्षेत्र को मजबूत बनाना होगा। युवाओं को नौकरियां मिलेंगी, लेकिन सुरक्षित। बहस जारी रहेगी। क्या ये कोड्स सफल होंगे? समय बताएगा। लेकिन सबको सुनना जरूरी। समान विकास का रास्ता यही है। मजदूर, किसान, सरकार सब मिलकर सोचें। ये मौका है बेहतर भारत बनाने का। विरोध से सीख लें। संवाद से रास्ता निकले। देश आगे बढ़े, लेकिन न्याय के साथ। ये विचारणीय है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं।

विकास और शांति का नया अध्याय

पुराने जमाने में जंगलों में राक्षस हुआ करते थे वह बहुत शक्तिशाली होते थे और बाहर के लोगों को जंगल में घुसने नहीं देते थे। इसी तरह वर्तमान समय में भी छत्तीसगढ़ के बस्तर में हिरमा नामक एक ऐसा राक्षस हुआ जिसने अपने को वहां का राजा घोषित कर दिया। उसने कहा कि मैं आदिवासी हूं और गैर आदिवासियों को हमारे क्षेत्र में आने का अधिकार नहीं है उसने यह भी कहा कि जल जंगल जमीन सब हमारी जात वालों का है इसमें कोई दूसरे का कोई हस्तक्षेप नहीं हो सकता। हमारे क्षेत्र में कोई उद्योगपति उद्योग नहीं लगा सकेगा क्योंकि सब कुछ हमारा है वहां अंबानी अडानी सबको रोक दिया गया। बाहर से जो लोग जाते थे उन्हें हिरमा और उनके लोग लूट लेते थे मार देते थे इस तरह आतंक का राज्य हो गया था। अब हिरमा राक्षस मारा गया अब वहां के लोग सुख शांति से विकास करेंगे। अब आदिवासी गैर आदिवासी का झगड़ा भी खत्म हो जाएगा अब जल जंगल जमीन किसका है इसका भी झगड़ा नहीं रहेगा अब अमन चैन हो जाएगा। लेकिन हिरमा की लूटपाट से जो लोग फायदा उठाते थे वह अपने को असह्य महसूस कर रहे हैं अब उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि उनका खर्चा पानी कैसे चलेगा। ऐसे लोगों ने जंतर मंतर पर जाकर हिरमा के समर्थन में प्रदर्शन भी किया लेकिन पूरे देश पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैं भारत सरकार को हिरमा से मुक्ति दिलाने के लिए धन्यवाद देता हूं और मैं चाहता हूं कि सरकार इस प्रकार के सभी जंगलों को ऐसे लोगों से मुक्त कर दे जहां ना आदिवासी गैर आदिवासी का झगड़ा हो ना जल जंगल जमीन पर किसी का कोई अधिकार हो ना जहां उद्योगपतियों को जाने पर कोई दिक्कत हो। देश पूरा खुला रहना चाहिए और सरकार इस दिशा में ठीक कदम उठा रही है।

बजरंग मुनि

आस्था का अभूतपूर्व अध्याय

@ अनुराग पाठक

अयोध्या इन दिनों केवल एक भूगोल नहीं, बल्कि एक मनःस्थिति बन गई है। यह वह धड़कन है, जो भोर की पहली किरण के साथ सरयू की ठंडी लहरों, मंदिर-घंटों की गूँज और लाखों श्रद्धालुओं की आस्था में एक साथ धड़क उठती है। रामलला के नव-निर्मित भव्य मंदिर ने अयोध्या के स्वरूप को बदला जरूर है, लेकिन असली परिवर्तन उस स्वर्णमंडित शिखर के आगमन के बाद दिखाई दिया, जिसके ऊपर 25 नवंबर को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धर्म ध्वजा फहराई। वह दृश्य सिर्फ अयोध्या का क्षण नहीं था; वह भारत के आध्यात्मिक इतिहास का एक निर्णायक मोड़ बन गया। जिन्होंने इसे नजदीक से देखा, उनके लिए यह जीवन की अमिट स्मृति है और जिन्होंने डिजिटल दुनिया में देखा, उन्होंने भी इसे आस्था की लपट की तरह महसूस किया।

आज मंदिर में कदम रखते ही हर भक्त की दृष्टि सबसे पहले ऊपर जाती है—उस स्वर्ण शिखर की ओर, जो सूर्य की रोशनी में ऐसा चमक उठता है मानो सदियों की प्रतीक्षा एक पल में रुपहली हो गई हो। ध्वजा की हर लहर केवल आस्था का संकेत नहीं देती, वह परंपरा, विजय और सनातन संस्कृति के आत्मविश्वास की प्रतीक बन जाती है। यही कारण है कि ध्वजारोहण के अगले ही दिन अयोध्या की हर गली, हर मोड़ और हर द्वार श्रद्धालुओं की अनंत कतारों से भर गया।

26 नवंबर का दिन इस परिवर्तन की पहली झलक था। अकेले एक ही दिन में एक लाख 90 हजार से अधिक भक्तों ने दर्शन किए। खास लोगों के लिए कोई अलग व्यवस्था नहीं। कोई विशेष पास नहीं। पूरा दिन केवल आम जन का था और वही आस्था पूरे परिसर में एक विद्युत-सी धड़कन भर रही थी। लोग केवल चल नहीं रहे थे; लगता था मानो किसी ऊँची, अनदेखी शक्ति की ओर खिंचे चले जा रहे हों उस दिशा में जहां भक्ति और भव्यता एकाकार हो रही थी। अगले दिनों में भी यह प्रवाह थमा नहीं। 27 नवंबर को एक लाख 20 हजार से अधिक भक्तों ने रामलला के दर्शन किए। 28 नवंबर को संख्या 82 हजार 530 रही। चौथे दिन लगभग 90 हजार लोग मंदिर पहुंचे। इन तीन-चार दिनों का यह प्रवाह किसी सामान्य तीर्थ की कथा नहीं बताता, यह उस मानवीय भाव की कहानी है जो दुर्लभ होता है वह भाव,

जब इंसान अपने भीतर बहुत दिनों से जल रही प्रतीक्षा को अचानक पिघलते हुए महसूस करता है। लोगों के चेहरों पर जो शांति थी, वह किसी दर्शन का परिणाम भर नहीं, बल्कि एक आत्म-संतोष का दर्पण थी। पांच दिनों में लगभग 4 लाख 83 हजार लोगों का मंदिर पहुंचना केवल संख्या नहीं, बल्कि यह प्रमाण है कि अयोध्या अब भावनाओं का सबसे बड़ा तीर्थ बन चुका है। यह वह स्थान है, जहां हर कदम इतिहास से मिलता है और हर प्रार्थना भविष्य की आशा बन जाती है।

मंदिर के प्रांगण में प्रवेश करते ही एक और दिलचस्प दृश्य सामने आता है। भक्त पहले रामलला की मूर्ति देखते हैं, यह जरूरी नहीं। उनकी नजर पहले उस स्वर्ण ध्वजा पर ठहरती है जो मंदिर के शिखर पर लहरा रही है। यह केवल प्रतीक नहीं, बल्कि शक्ति, संकल्प और सनातन विजय का एक दृश्यात्मक रूप है। कई भक्त बताते हैं कि शिखर पर पड़ती रोशनी उन्हें कुछ क्षणों के लिए रोक देती है। वह चमक मन में सीधे उतरती है, मानो कोई पुराना व्रत पूर्ण हुआ हो। सोशल मीडिया पर ध्वजारोहण का दृश्य आज भी प्रमुखता से छाया हुआ है। वीडियो, तस्वीरें और लाइव क्लिप लोगों के मोबाइल पर लगातार देखे जा रहे हैं। इंटरनेट पर इस ध्वजा की लहर ऐसी लगी है कि अब हजारों लोग सिर्फ इसे प्रत्यक्ष देखने के लिए अयोध्या की यात्रा कर रहे हैं। यह यात्रा केवल एक धार्मिक कर्म नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक क्षण को अपने भीतर समाहित करने का अवसर बन चुकी है।

दर्शन व्यवस्था अब सामान्य हो रही है, लेकिन भीड़ में गिरावट नजर नहीं आती। रविवार के लिए लगभग सभी दर्शन पास पहले ही बुक हो चुके हैं। यह स्पष्ट है कि यह प्रवाह आने वाले हफ्तों में और बढ़ सकता है। अयोध्या की गलियों का माहौल भी इस परिवर्तन का साक्षी है। प्रसाद की महक, जय-श्रीराम के जयघोष, दुकानों की चहल-पहल, और मंदिर प्रांगण में बजते भजन। यह शहर इन दिनों किसी जीवित महाकाव्य की तरह है, जहां हर दृश्य में अध्यात्म लिखा है और हर ध्वनि में भक्ति की गूँज है। अयोध्या के इस नए रूप को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि रामलला का मंदिर अब केवल स्थापत्य नहीं रहा। यह एक भावना है, एक सामूहिक चेतना, एक नवजागरण। स्वर्ण शिखर के दर्शन अब केवल धार्मिक रस्म नहीं, बल्कि आध्यात्मिक उत्सव बन चुके हैं। यह उत्सव देश भर में फैल रही उस सांस्कृतिक धड़कन का प्रतीक है, जो आज अयोध्या से शुरू होकर करोड़ों भारतीयों के मन तक पहुंच चुकी है।

जुबानी तीर

“

संसद नाटक का मंच नहीं है; यह काम करने और परिणाम देने की जगह है। विपक्ष को theatrics (नाटकबाजी) की बजाय रचनात्मक बहस पर ध्यान देना चाहिए।

नरेंद्र मोदी (प्रधानमंत्री)

“

संसद को सिर्फ दिखावे का मंच नहीं बनना चाहिए। सरकार को वास्तविक जनता के मुद्दों जैसे SIR, नागरिकों की चिंताएं और महत्वपूर्ण विधेयक पर ध्यान देना चाहिए।

मल्लिकार्जुन खड़गे (कांग्रेस नेता)

“

सरकार ने संसद को कब्जा कर लिया है। वे अपने विधेयक पास कराने में जल्दी में हैं और महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक चर्चा का अवसर नहीं दे रहे हैं।

गौरव गोगोई (कांग्रेस सांसद)



सर्दियों में बालों की पूरी देखभाल

आयुर्वेदिक उपायों से बनाएं मजबूत, घने और चमकदार बाल

सर्दियों का मौसम अपने साथ कई चुनौतियाँ लेकर आता है। तापमान कम होने पर शरीर का रक्तसंचार धीमा हो जाता है और इसकी सीधी प्रभावी मार बालों पर पड़ती है। ठंडी हवा बालों की नमी छीन लेती है। खोपड़ी सूखी होने लगती है। रूसी बढ़ जाती है। बाल उलझते हैं। टूटते हैं और अपनी चमक खोते जाते हैं। आधुनिक उत्पाद तुरंत राहत का वादा करते हैं, लेकिन आयुर्वेद की दृष्टि से बालों की देखभाल सिर्फ बाहरी उपचार नहीं, बल्कि शरीर, मन और प्रकृति की आपसी संतुलित क्रिया है। सर्दियों में बालों को बेहतर बनाने के लिए आयुर्वेद सर्दियों से आजमाए हुए प्राकृतिक उपायों की बात करता है। ये उपाय धीरे धीरे अपने असर दिखाते हैं, लेकिन शरीर की मूल प्रकृति के साथ काम करते हैं और लंबे समय तक स्थायी लाभ देते हैं। आयुर्वेद के अनुसार ठंड का मौसम वात दोष को बढ़ाता है। वात बढ़ने से सूखापन आता है और यह सूखापन सबसे पहले बालों पर दिखाता है। इसलिए सर्दियों में बालों की देखभाल का पहला सिद्धांत है नमी को सुरक्षित रखना। नमी को सुरक्षित करना सिर्फ तेल लगाने भर तक सीमित नहीं होता बल्कि आहार, दिनचर्या और मानसिक संतुलन तक से जुड़ा होता है। आयुर्वेद कहता है कि बालों को मजबूत बनाने के लिए पहले वात को शांत करना आवश्यक है। इसके लिए शरीर को भीतर और बाहर दोनों तरफ से पोषण देना होता है।

सर्दियों में नियमित तेल मालिश बालों के लिए औषधि की तरह काम करती है। आयुर्वेद में तिल का तेल, नारियल का तेल, आंवला तेल, भृंगराज तेल और बादाम तेल सबसे प्रभावी माने जाते हैं। तिल का तेल गर्म तासीर वाला होता है और ठंड में जड़ों को गहराई तक पोषण देता है। भृंगराज को आयुर्वेद में किंग ऑफ हेयर कहा गया है। यह बालों की जड़ों को बल देता है और गिरते बालों को रोकता है। नारियल का तेल स्वभाव से शीतल है लेकिन सर्दियों में इसे थोड़ा गुनगुना करके लगाने से यह बालों की नमी को संतुलित करता है। तेल मालिश के बाद हल्की भाप लेने से तेल जड़ों तक बेहतर तरीके से पहुंचता है और सिर की कोशिकाएं सक्रिय होती हैं। यह प्रक्रिया रक्तसंचार बढ़ाती है और बालों की वृद्धि को प्राकृतिक रूप से उत्तेजित करती है। सर्दियों में रूसी सबसे आम समस्या बन जाती है। आयुर्वेद इसे सिर्फ एक त्वचा संबंधी समस्या नहीं मानता। उसके अनुसार रूसी पित्त और वात के असंतुलन की संयुक्त अभिव्यक्ति है। इसके लिए नीम, टी ट्री और कपूर अत्यंत लाभदायक माने जाते हैं। गर्म पानी में नीम की कुछ पत्तियाँ उबालकर इस पानी से सिर धोना या नीम का पेस्ट बनाकर जड़ों पर लगाना रूसी को कम करता है। कपूर सिर को ठंडक देता है और सूखी परत को हटाने में मदद करता है। दही को आयुर्वेद में प्राकृतिक कंडीशनर माना गया है। सप्ताह में एक बार दही और आंवला पाउडर मिलाकर लगाया जाए तो सिर की जलन कम होती है और रूसी भी घटती है।

सर्दियों में बालों का झड़ना भी बढ़ जाता है। आयुर्वेद मानता है कि बालों का झड़ना केवल स्थानीय कारणों से नहीं होता। यह आहार और जीवनशैली से गहराई से जुड़ा



होता है। ठंड में शरीर में रक्त का प्रवाह धीमा हो जाता है और उसकी पोषक क्षमता कमजोर होने लगती है। इससे बालों तक सही मात्रा में पोषण नहीं पहुंच पाता। इसीलिए आयुर्वेद के आहार नियम बेहद महत्वपूर्ण हैं। बालों को मजबूत बनाने के लिए आहार में तिल, गुड़, शहद, देसी घी, बादाम, किशमिश, मूंग दाल, हरी सब्जियाँ और मौसमी फलों को शामिल करना चाहिए। तिल को आयुर्वेद में शिरोरस अर्थात् सिर का पोषण माना गया है। सर्दियों में तिल के लड्डू, तिल का हलवा या तिल को भोजन में किसी भी रूप में शामिल करना बालों की जड़ों को भीतर से मजबूत करता है। देसी घी वात को शांत करता है और शरीर को गर्म रखता है जिसके कारण खोपड़ी सूखी नहीं होती। बादाम और अखरोट ओमेगा फैटी एसिड्स के बेहतरीन स्रोत हैं और ये बालों की चमक और मोटाई दोनों में सुधार करते हैं। आयुर्वेद का एक बड़ा सिद्धांत है कि नींद बालों का प्राकृतिक पोषण है। सर्दियों में नींद दो कारणों से प्रभावित होती है। एक तो मौसम की ठंड शरीर को कस देती है और दूसरी तरफ तनाव सामान्य से अधिक महसूस होता है। तनाव बालों की सेहत का सबसे बड़ा छुपा हुआ शत्रु है। इसलिए आयुर्वेद मौसमी दिनचर्या में रोजाना कुछ मिनट ध्यान, श्वास अभ्यास और हल्की शारीरिक गतिविधि जोड़ने की बात करता है। यह न केवल तनाव घटाता है बल्कि रक्तसंचार को भी बढ़ाता है जिससे बालों की जड़ें मजबूत होती हैं। रात को सोने से पहले तिल के तेल की हल्की मालिश न केवल बालों के लिए उपयोगी है बल्कि यह नींद को भी गहरा और स्वस्थ बनाती है।

सर्दियों में बालों की स्वच्छता भी सावधानी से करनी पड़ती है। गर्म पानी से सिर धोने की आदत कई लोगों में होती है लेकिन आयुर्वेद इसे बालों

के लिए हानिकारक मानता है। बहुत गर्म पानी बालों की जड़ों को कमजोर कर देता है। इससे बाल टूटने लगते हैं और सूखापन बढ़ जाता है। इसलिए सिर धोने के लिए हल्का गुनगुना पानी ही उपयुक्त है। रासायनिक शैंपू की जगह हल्के आयुर्वेदिक शैंपू या घर के बने शैंपू का उपयोग सबसे अच्छा माना जाता है।



शिखाकाई और आंवला का मिश्रण बालों के लिए पूर्ण आयुर्वेदिक क्लींजर है। यह नमी को सुरक्षित रखते हुए सिर की सफाई करता है और बालों को मुलायम बनाता है। आयुर्वेद बालों की देखभाल में हर्बल पैक की भी विशेष भूमिका बताता है। मेथी दानों को रात भर भिगोकर सुबह पीसकर लगाया जाए तो यह बालों में प्राकृतिक प्रोटीन भरता है। मेथी सिर की खुजली कम करती है और टूटते बालों को रोकती है। ब्राह्मी और शतावरी का पेस्ट तनाव को कम करता है और जड़ें मजबूत बनाता है। ये दोनों जड़ी बूटियाँ मन को शांत करने में भी बहुत प्रभावी हैं और मन शांत होगा तो बाल स्वाभाविक रूप से बेहतर होंगे। सर्दियों में वातावरण का शुष्कपन बालों की ऊपरी परत को भी प्रभावित करता है और बाल रुखे हो जाते हैं। इसके लिए आयुर्वेद में एलोवेरा को सर्वोत्तम माना गया है। एलोवेरा जेल को सीधे सिर की जड़ों में लगाया जाए तो यह बालों में गहराई तक नमी पहुंचाता है। यह प्रकृति का सबसे प्रभावी मॉइस्चराइजिंग तत्व है। सप्ताह में दो बार एलोवेरा लगाने से बाल चमकदार होते हैं और उनकी लचीली ताकत बढ़ती है। आयुर्वेद के अनुसार सर्दियों में बालों की देखभाल का अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण नियम है धैर्य। आयुर्वेदिक उपचार धीरे धीरे असर दिखाते हैं लेकिन एक बार असर दिखने पर लंबे समय तक टिके रहते हैं। इन उपायों के साथ दिनचर्या में नियमितता सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। आयुर्वेद यह भी मानता है कि बालों की असली चमक केवल बाहरी देखभाल से नहीं आती बल्कि शरीर, मन और आहार तीनों के संतुलन से आती है।

परम ज्योति के सच्चे साधक: महात्मा रामलिंगम जी

अवतरण की भूमि: दक्षिण का पवित्र तीर्थ

दक्षिण भारत की पावन धरती पर चिदम्बरम वह ऐतिहासिक स्थान है, जहाँ भगवान नटराज का दिव्य मन्दिर विराजमान है। यह तिर्यक्षेत्र है, शिव की लीला का साक्षी। चिदम्बरम के निकट मरुदरूर नामक ग्राम में विक्रम संवत् 1880 के चौथे चरण में एक शिवभक्त परिवार बसता था। रामय्या पिल्ले और उनकी पत्नी चिन्नमल परम शिव के प्रेम में डूबे हुए थे। रामय्या पिल्ले का हृदय बिल्कुल निर्मल था, वे तप का जीवन जीते थे। उनका अधिकांश समय भगवान के चिंतन में बीतता था। घर पर साधु-संतों का आगमन होने पर वे और चिन्नमल दोनों असीम प्रसन्नता अनुभव करते थे। एक दोपहर एक योगी आए। उन्होंने चिन्नमल को भभूत देकर आशीर्वाद दिया कि तुम पुत्रवती हो जाओगी। योगी की कृपा से रामय्या पिल्ले दंपति को संवत् 1880 में एक पुत्र की प्राप्ति हुई। इस प्रकार महात्मा रामलिंगम जी का जन्म हुआ।

जन्म के छह माह बाद ही उनके पिता शिवलोक को प्रस्थित हो गए। रामलिंगम जी का पालन-पोषण बड़े भाई सभापति ने किया। पिता के देहावसान के बाद सभापति मरुदरूर से मद्रास चले आए। नव वर्ष की अवस्था से ही रामलिंगम जी में वैराग्य का बीज अंकुरित होने लगा। वे संसार के नश्वर स्वरूप पर चिंतन करने लगे। उनका मन भगवान सुब्रह्मण्य के प्रति अनुरक्त हो गया। नव वर्ष की ही अवस्था में उन्होंने एक स्तोत्र रचा और अपने आराध्य के चरणों में अर्पित कर दिया। उन्होंने भगवान सुब्रह्मण्य से निवेदन किया कि मैं आपके उन भक्तों का संग चाहता हूँ, जिनकी भक्ति आपके चरणों में ही लीन है। रामलिंगम जी की यह प्रवृत्ति से पूरे घर में आध्यात्मिक ज्योति का प्रदीप जल उठा। कण-कण में भक्तिमयी कविता का स्फुरण होने लगा।

साधना का प्रारंभ: एकांत के कोठे पर

विद्यालय में पढ़ने-लिखने में रामलिंगम जी का मन बिल्कुल न लगता था। एक बार माता ने उन्हें बहुत समझाया। उन्होंने माता को वचन दिया कि पढ़ेंगे, और एक दर्पण लेकर घर के कोठे पर चले गए। एक कमरे में एकांतवास में दर्पण के सामने बैठकर वे स्तोत्रों और गीतों से अपने हृदयदेवता सुब्रह्मण्य को रिझाने लगे। लोग समझते थे कि वे अध्ययन कर रहे हैं। इस प्रकार अल्पावस्था में ही उनकी साधना का श्रीगणेश हो गया। धीरे-धीरे वे संतों के संपर्क में आने लगे। उनसे वेदांत ज्ञान और ब्रह्म के संबंध में विचार करने लगे। वे मद्रास के तिरुवोरंजूर के मन्दिर में कभी-कभी भगवान शिव के दर्शन के लिए जाते थे। मन्दिर में वे अपने मधुर काव्य की धारा बहाते रहते थे। इस समय उनकी आयु केवल 16 वर्ष की थी।

एक दिन विशेष उत्सव के अवसर पर मन्दिर में भगवान शिव की परिक्रमा कर रहे थे। तभी उनके सामने एक अद्भुत योगी प्रकट हुए। वे योगी के चरणों पर गिर पड़े। योगी ने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं सदा तुम्हारे साथ हूँ। न भयभीत होना, अपने मधुर गीतों से तुम सदा मेरी पूजा करोगे। योगी ने रामलिंगम जी की आँखों में आँखें मिलाकर मंत्र दीक्षा दी। बातचीत में ही योगी अंतर्धान हो गए। रामलिंगम जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि साक्षात्

तिरुवोरंजूर के अधिपति महादेव ने मुझे अपने दर्शन से कृतार्थ किया है। उनके रोम-रोम सिहर उठे। उन्होंने आत्मनिवेदन की भावना में कहा कि हे देव, मैं पूर्ण रूप से आपके शरणागत हूँ। आप मेरी रक्षा कीजिए, अपनी कृपा और भक्ति का दान दीजिए। वे नित्य नए-नए पद रचकर समर्पित करने लगे। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध शैव संत माणिकवासागर के ग्रंथ तिरुवाचक का पाठ करते थे। इस प्रकार उनकी भक्ति नित्य प्रति बढ़ने लगी। लोग उनकी प्रसिद्धि से आकृष्ट होकर उनके अनुयायी बनने में गौरव समझने लगे।

चमत्कारों का उदय: भूख और दिव्य दर्शन

एक दिन विचित्र घटना घटी। आधी रात को उन्हें बड़ी भूख लगी। वे भगवच्चिंतन में इतने तन्मय हो गए थे कि भूख की सुधि ही न रही। मन्दिर के पुजारी के वेश में साक्षात् भगवान ने दर्शन देकर उन्हें कृतार्थ किया—ऐसा उन्होंने अपनी एक रचना में कहा है। एक महात्मा के रूप में उनकी प्रसिद्धि बढ़ गई। माता, वहिन और भाई ने विवाह कर गृहस्थाश्रम स्वीकार करने के लिए बहुत आग्रह किया। उन्होंने माता की प्रसन्नता के लिए विवाह कर लिया और गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया। माता का देहांत होने पर मद्रास से चिदम्बरम चले आए। रास्ते में पॉन्डिचेरी में भी उन्होंने बड़े-बड़े विद्वानों से भेंट की। चिदम्बरम के अधिपति से उन्होंने कहा कि हे परमेश्वर, आपने कृपापूर्वक मुझे आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है। मुझे पूर्ण तथा परम निर्मल ब्रह्म-ज्ञान प्रदान कीजिए। उन्होंने अन्य प्रसिद्ध मंदिरों में जाकर अपने आराध्य देव का दर्शन किया। इस प्रकार उनकी प्रभु में अनन्यता बढ़ गई। वे उन्हें छोड़कर किसी दूसरे के सामने हाथ फैलाना बहुत बड़ा पाप मानते थे।

एक बार उनके एक संबंधी ने उनके द्वारा अपने हित की बात पहुँचानी चाही। संबंधी ने सोचा कि रामलिंगम जी के कहने से अमुक धनी व्यक्ति द्वारा मेरा काम अवश्य बन जाएगा। रामलिंगम जी ने निस्संकोच कहा कि मैं प्रभु को छोड़कर किसी भी वस्तु के लिए दूसरे के सामने हाथ नहीं फैलाऊँगा। यदि मेरे शरीर के टुकड़े-टुकड़े होने की भी संभावना उठ खड़ी होगी तो भी मैं किसी दूसरे की याचना में नहीं जाऊँगा। मेरे प्रभु सर्वसमर्थ हैं, सारे संसार के सृजन, पालन और संहार के मूलाधार हैं। महात्मा रामलिंगम जी अपनी जन्मभूमि के निकट ही करंगुजी स्थान में रहने लगे। यहीं उनके भाई की मृत्यु हो गई। इसी स्थान पर महात्मा रामलिंगम जी ने पानी से दीप जलाया था। बड़े-बड़े विद्वान इस घटना से उनके चरणों पर नत हो गए। उनके मानवमय जीवन का यह वृत्त हो गया कि मैं समस्त संसार और प्राणीमात्र का हित करूँगा। उनकी भावुकता ने भक्ति का रूप धारण कर लिया। उन्होंने भगवान से निवेदन किया कि क्या मैं आपको भूल सकता हूँ। जिस क्षण मैं आपको भूल जाऊँगा उसी क्षण मेरे प्राण उड़ जाएँगे। क्या जाप मुझे भूल जाएँगे? हे देव, तब मैं क्या करूँगा, कहाँ जाऊँगा, मैं किससे बात करूँगा। हे भगवान, आप मुझ पर मेरी माता से भी अधिक कृपालु हैं। यदि आप भूल भी जाएँ तो आपकी विश्वव्यापी कृपा मुझे कभी नहीं भूलेगी। इसी विश्वास के बल पर मैं प्रसन्नता



और सुख का अनुभव करता हूँ। मुझे आप मत भूलिए, मुझे अपनी दिव्य ज्योति-कृपा से कृतार्थ कीजिए। इसके लिए यही समय ठीक है।

दिव्य ज्योति का अवतरण: मेलकुपम की पावन कुटिया

एक दिन मेलकुपम कुटिया में उन पर दिव्य ज्योति का अवतरण हुआ। इस घटना के स्मृतिरूप में एक दीप उस समय से जलता आ रहा है। उन्होंने पंद्रह हजार नौ सौ छह छंदों में दिव्य ज्योति-भागवती कृपा का अरुलपा के रूप में गान किया। अरुलपा उनकी अमर कृति है। उनके उपदेशों पर वेदांत का प्रत्यक्ष प्रभाव था। उन्होंने लोगों को दिन-रात भगवान की उपासना में निमग्न रहने की सीख दी। भगवान की निरंतर उपासना करना ही उनका सिद्धांत था। उन्होंने लोगों को कहा कि समस्त संबंधों का परित्याग कर केवल परमात्मा का भजन कीजिए। भगवान के पवित्र चरणों का ही सदा चिंतन कीजिए—अमरता का यही प्रशस्त पथ है।

सन्मार्ग की स्थापना: वदलूर का उत्तर ज्ञान चिदम्बर

उन्होंने अपने आध्यात्मिक कार्य को स्थायी रूप प्रदान किया। उन्होंने करंगुजी के निकट ही वदलूर नामक स्थान को अपना कार्यक्षेत्र चुना। उन्होंने इसका नाम उत्तर ज्ञान चिदम्बर रखा, समरस संघ की स्थापना की और दीन-दुखियों तथा असहायों को भोजन देने के लिए सत्य धर्मशाला बनवाई। एक ज्ञान सभाई का भी निर्माण कराया गया। उसमें नित्य ज्योति-अरुल पेरूम ज्योति की पूजा होती है। उन्होंने व्यर्थ के वाद-विवाद का परित्याग कर साधना-मय जीवन बिताने की लोगों को प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि मैं सच कहता हूँ कि ऐसा करने से आपको परम पवित्र दिव्य ज्योति मिलेगी, दिव्य प्रेम प्राप्त होगा। भगवान पूर्णरूप से प्रेमस्वरूप हैं। उन्होंने भक्ति के माध्यम से भगवान से कहा कि हे देव, आप एक तथा अनेक रूप

में व्याप्त हैं। आपकी दिव्यता के पर्वत पर अमृत का स्रोत बहता रहता है। मैं इस पृथ्वी पर उसका आस्वादन करना चाहता हूँ। हे विराट् रूप वाले परमेश्वर, आप चिन्मय ज्ञान स्वरूप हैं, द्वार खोलिए। उन्होंने साधना के स्तर पर बताया कि शुद्ध सन्मार्ग—पवित्र आध्यात्मिक पथ वेदांत, योगांत, नादांत, कालांत से परे है। यह शाश्वत ज्योति का अविनश्वर-चिरंतन पथ है।

काव्य की अमर धरोहर: रचनाओं का दिव्य संग्रह

महात्मा रामलिंगम जी भागवती कृपा के काव्यकार थे, वे दिव्य संगीत के स्रष्टा थे। उनकी वाणी में परमात्मा के स्तवन के रूप में साक्षात् सामवेद उतर आया। उन्होंने प्राणी मात्र को सावधान किया कि केवल अपना ही नहीं, समस्त लोक का हितचिंतन करना चाहिए। समष्टि के सुख में ही व्यक्ति का कल्याण समस्थित है। दक्षिण भारत के ही नहीं—सम्पूर्ण भारत के संत साहित्य में उनको गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। उन्होंने संतविचार-धारा को समरस सन्मार्ग से समलंकित किया। समरस सन्मार्ग संतमत की सनातन परंपरा है, पर इसमें महात्मा रामलिंगम जी ने अपनी मौलिकता की छाप लगा दी। उन्होंने सहनशीलता और सदाचार को प्रधानता दी। उनके दिव्य काव्य में सत्य के शिव और सौंदर्यरूप का दर्शन होता है। माधुर्य और भक्तिरस उनके काव्य के प्राणवान अंग हैं। उनकी रचना 'अरुलपा' उच्च विचारों की अक्षय निधि है, प्राणीमात्र के प्रति प्रेम का पवित्र साहित्य-प्रतीक है। इसमें भगवान की कृपा का अक्षर-अक्षर में दर्शन होता है।

महात्मा रामलिंगम जी की प्रसिद्ध रचना 'अरुलपा' है, जिसमें उन्होंने अनगिनत पदों में भगवान की कृपामयी ज्योति की महिमा गाई है। यह कृति निर्गुण सगुण भगवदीय तत्व की समन्वयभूमि पर परमात्मा की परम शिव की उपासना का साक्षी है। उन्होंने अपने आप में आत्मा में परमानंदमयी सनातन चिन्मय भागवती ज्योति की अनुभूति की। उन्होंने अपने श्वास-श्वास में, प्राण के स्वर-स्वर में अक्षर ब्रह्म का ही चिंतन किया। जिस समय दक्षिणेश्वर के शक्ति-मंदिर में रामकृष्ण परमहंस भक्ति की भागीरथी प्रवाहित कर रहे थे, वृंदावन में महात्मा ललित किशोरी जी प्रेम की कालिंदी के तट पर लीलापति नंदनंदन की रूप-माधुरी का आस्वादन कर रहे थे, उसी समय दक्षिण भारत में योगी रामलिंगम परम शिव की ज्ञान-सरस्वती के विमल तट पर अमरता का आवाहन कर रहे थे। यही उनके चरित्र की ऐतिहासिकता है।

तपस्या की पराकाष्ठा: कमल के समान जीवन

महात्मा रामलिंगम जी संसार में रहकर भी जल में कमल के समान थे। जीवन के अंतिम चरण में उन्होंने कठिन-से-कठिन तपस्या अपनाई। वे अधिकांश समय व्रत और उपवास में बिताते थे। सरलता, विनम्रता और सदाचार की चिन्मय भूमि पर उन्होंने अपनी तपोसिद्धि की सत्यता चरितार्थ की। उनकी करनी-कथनी में अद्भुत समरसता थी।

रेयर अर्थ के चुंबक उत्पादन को मिलेगा मजबूत धक्का 7,280 करोड़ की नई योजना

योजना की मंजूरी: स्वदेशी उत्पादन की नई शुरुआत

केंद्रीय कैबिनेट ने 26 नवंबर 2025 को एक महत्वपूर्ण फैसला लिया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में 7,280 करोड़ रुपये की योजना को हरी झंडी दे दी गई। यह योजना रेयर अर्थ के स्थायी चुंबकों, जिन्हें सिन्टर्ड रेयर अर्थ परमानेंट मैग्नेट्स कहते हैं, के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए है। भारत अभी इन चुंबकों पर लगभग पूरी तरह से आयात पर निर्भर है। हर साल करीब 900 टन की जरूरत पड़ती है, जो मुख्य रूप से चीन जैसे देशों से आती है। लेकिन अब सरकार का लक्ष्य है कि आने वाले समय में आयात को 70 प्रतिशत तक कम किया जाए। यह योजना न सिर्फ आर्थिक रूप से मजबूत करेगी, बल्कि पर्यावरण के प्रति जागरूक लोगों के लिए भी एक अच्छी खबर है। क्योंकि ये चुंबक इलेक्ट्रिक वाहनों और नवीकरणीय ऊर्जा के उपकरणों में इस्तेमाल होते हैं, जो ग्रीन टेक्नोलॉजी को आगे बढ़ाते हैं। योजना के तहत 6,000 टन प्रति वर्ष की उत्पादन क्षमता बनाई जाएगी। पांच कंपनियों को वैश्विक बोली के जरिए यह जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, हर एक को अधिकतम 1,200 टन की क्षमता मिलेगी। इसमें रेयर अर्थ के ऑक्साइड को धातु में बदलना, धातु को मिश्र धातु बनाना और फिर तैयार चुंबक उत्पादन तक का पूरा चेन शामिल है। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने कहा कि यह योजना भारत को वैश्विक बाजार में एक मजबूत खिलाड़ी बनाएगी। यह आत्मनिर्भर भारत अभियान का हिस्सा है और राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन से जुड़ी हुई है। कुल मिलाकर, यह कदम देश की ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करेगा और नेट-जीरो लक्ष्य की दिशा में एक बड़ा योगदान देगा। योजना की अवधि सात साल की होगी, जिसमें दो साल इकाइयों के निर्माण के लिए और पांच साल प्रोत्साहन वितरण के लिए रखे गए हैं। इससे नौकरियां पैदा होंगी और स्थानीय उद्योगों को नया बल मिलेगा। पर्यावरण के लिहाज से देखें तो, यह योजना साफ-सुथरी मोबिलिटी को बढ़ावा देगी, जिससे कार्बन उत्सर्जन कम होगा और तेल आयात पर निर्भरता घटेगी। कुल 6.9 मिलियन टन के भंडार वाले राज्यों जैसे ओडिशा, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में खनन पर्यावरण मानकों के साथ होगा। यह योजना न सिर्फ तकनीकी रूप से उन्नत है, बल्कि सामाजिक रूप से भी समावेशी बनेगी।

क्यों है जरूरी यह योजना? इलेक्ट्रिक वाहनों और हरी ऊर्जा की कुंजी

रेयर अर्थ के चुंबक आज के समय में एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये इलेक्ट्रिक वाहनों के मोटर, पवन टरबाइन, सोलर पैनल और यहां तक कि रक्षा उपकरणों में इस्तेमाल होते हैं। भारत जैसे देश में जहां इलेक्ट्रिक वाहनों का बाजार तेजी से बढ़ रहा है, वहां इन चुंबकों की कमी एक बड़ी समस्या बन सकती है। अभी भारत सालाना 4,000 से 5,000 टन इनकी खपत करता है, लेकिन उत्पादन लगभग शून्य है। चीन दुनिया का 90 प्रतिशत उत्पादक है, जिससे सप्लाई चेन में जोखिम रहता है। वैश्विक तनाव या महामारी जैसी स्थितियों में आयात रुक सकता है, जो अर्थव्यवस्था को ठप कर दे। इस योजना



से घरेलू उत्पादन शुरू होने पर न सिर्फ आयात बचेगा, बल्कि निर्यात के अवसर भी खुलेंगे। पर्यावरण के प्रति संवेदनशील पाठकों को यह जानना चाहिए कि ये चुंबक हरी तकनीक का आधार हैं। इलेक्ट्रिक वाहन इस्तेमाल करने से पेट्रोल-डीजल की खपत कम होती है, जिससे वायु प्रदूषण घटता है। नवीकरणीय ऊर्जा में ये चुंबक कुशलता बढ़ाते हैं, जिससे बिजली उत्पादन सस्ता और साफ होता है। भारत का नेट-जीरो 2070 लक्ष्य इसी पर निर्भर है। योजना से कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और ऊर्जा सुरक्षा मजबूत होगी। इसके अलावा, रक्षा और एयरोस्पेस जैसे क्षेत्रों में स्वदेशी उत्पादन से राष्ट्रीय सुरक्षा बढ़ेगी। उद्योग जगत से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। इलेक्ट्रॉनिक्स, स्टील और मेडिकल उपकरण बनाने वाली कंपनियां उत्साहित हैं। जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ सहयोग की संभावना है। लेकिन चुनौतियां भी हैं। खनन में पर्यावरण प्रभाव को नियंत्रित करना होगा, खासकर राजस्थान के अरावली क्षेत्र में। परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत सख्त मानक लागू होंगे। कुल मिलाकर, यह योजना एक संतुलित कदम है जो आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों को जोड़ती है। यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या भारत अब वैश्विक हरी क्रांति का नेतृत्व कर सकता है?

योजना के मुख्य तत्व: प्रोत्साहन और क्षमता निर्माण का खाका

यह 7,280 करोड़ रुपये की योजना कई हिस्सों में बंटी हुई है। सबसे बड़ा हिस्सा 6,450 करोड़ रुपये का है, जो बिक्री से जुड़े प्रोत्साहन के रूप में मिलेगा। यह पांच साल तक चलेगा और चुंबकों की बिक्री पर आधारित होगा। दूसरा हिस्सा 750 करोड़ रुपये का कैपिटल

सब्सिडी है, जो उत्पादन इकाइयों के निर्माण के लिए दिया जाएगा। तीसरा, 80 करोड़ रुपये अनुसंधान और विकास पर खर्च होंगे। कुल मिलाकर, यह बजट से तीन गुना निवेश आकर्षित करेगा। योजना के तहत एकिकृत सुविधाएं बनेंगी, जहां रेयर अर्थ के कच्चे माल से लेकर तैयार उत्पाद तक सब कुछ होगा। पांच लाभार्थियों का चयन वैश्विक प्रतिस्पर्धी बोली से होगा। हर इकाई को 30 प्रतिशत तक पूंजीगत सहायता मिलेगी। योजना की अवधि सात साल की है, जिसमें दो साल निर्माण के लिए और बाकी प्रोत्साहन वितरण के लिए। भारत के पास दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा रेयर अर्थ भंडार है, करीब 6.9 मिलियन टन। लेकिन प्रसंस्करण की कमी थी। अब यह योजना उस कमी को पूरा करेगी। खनन वाले राज्य जैसे ओडिशा, केरल और गुजरात में अवसर बढ़ेंगे। लेकिन यह सिर्फ उत्पादन तक सीमित नहीं। यह सेमीकंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिज मिशन से जुड़ी है। सरकार का कहना है कि इससे रोजगार सृजन होगा और स्थानीय अर्थव्यवस्था मजबूत बनेगी। हालांकि, सफलता के लिए कुशल श्रमिकों की जरूरत पड़ेगी। प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने पड़ेंगे। पर्यावरणीय रूप से, खनन में रेडिएशन नियंत्रण जरूरी है। विभाग ऑफ एटॉमिक एनर्जी के मानक लागू होंगे। यह योजना एक विचारोत्तेजक उदाहरण है कि कैसे सरकारी सहायता निजी निवेश को प्रेरित कर सकती है। क्या यह मॉडल अन्य क्षेत्रों में भी लागू हो सकता है?

फायदे की झलक: आर्थिक मजबूती से लेकर पर्यावरण संरक्षण तक

इस योजना के फायदे कई स्तरों पर दिखेंगे। सबसे पहले, आर्थिक। आयात बचत से हर साल अरबों रुपये की बचत होगी। उत्पादन बढ़ने से निर्यात संभव होगा,

जिससे विदेशी मुद्रा आएगी। नौकरियां पैदा होंगी, खासकर ग्रामीण और तटीय क्षेत्रों में। दूसरा, रणनीतिक। सप्लाई चेन मजबूत होगी, जो रक्षा और एयरोस्पेस के लिए जरूरी है। तीसरा, पर्यावरणीय। इलेक्ट्रिक वाहनों का बढ़ना प्रदूषण कम करेगा। नवीकरणीय ऊर्जा से साफ बिजली मिलेगी। नेट-जीरो लक्ष्य करीब आएगा। तेल आयात घटेगा, ऊर्जा सुरक्षा बढ़ेगी। लेकिन संतुलित नजरिया रखें। खनन से पर्यावरण को नुकसान का खतरा है। इसलिए सख्त निगरानी जरूरी। योजना से उद्योगों को सस्ते कच्चे माल मिलेंगे, जैसे ईवी निर्माता। स्टील और इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियां लाभान्वित होंगी। वैश्विक सहयोग से तकनीक ट्रांसफर होगा। जापान जैसे देश मदद करेंगे। लेकिन चुनौतियां हैं, जैसे कुशलता की कमी। सरकार को प्रशिक्षण पर जोर देना चाहिए। कुल मिलाकर, यह योजना एक सकारात्मक बदलाव लाएगी। यह सोचने पर विवश करती है कि क्या भारत अब हरी अर्थव्यवस्था का केंद्र बनेगा?

भविष्य की दिशा: वैश्विक बाजार में भारत की मजबूत स्थिति

यह योजना भारत को वैश्विक रेयर अर्थ मैग्नेट बाजार में मजबूत बनाएगी। अभी चीन का दबदबा है, लेकिन भारत का प्रवेश संतुलन लाएगा। निर्यात से नई बाजार खुलेंगी। आत्मनिर्भरता से राष्ट्रीय गौरव बढ़ेगा। पर्यावरण के लिहाज से, सतत खनन से जैव विविधता बचेगी। नेट-जीरो की राह आसान होगी। लेकिन सफलता के लिए नीतिगत स्थिरता जरूरी। उद्योग और सरकार का सहयोग चले। यह योजना एक प्रेरणा है कि कैसे छोटे कदम बड़े बदलाव लाते हैं। क्या यह अन्य महत्वपूर्ण खनिजों के लिए मॉडल बनेगी?

अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में गूंजा जगद्गुरु कुमार स्वामी जी का संदेश



जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने कहा कि गीता के केवल दो श्लोकों के माध्यम से असाध्य रोगों का उपचार हुआ है, और इस चमत्कारिक अनुभव ने पूरे विश्व को आश्चर्यचकित कर दिया है।



@ भारतश्री व्यूरो

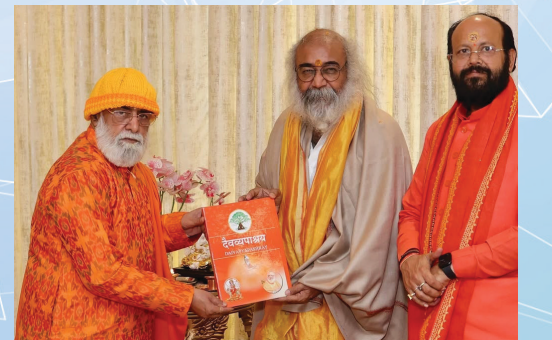
कुरुक्षेत्र में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अंतर्गत आयोजित विराट संत सम्मेलन ने आध्यात्मिकता, दर्शन और भारतीय संस्कृति की महत्ता को एक बार फिर बड़े पैमाने पर रेखांकित किया। सम्मेलन का केंद्रबिंदु रहा अनंत श्री विभूषित जगतगुरु महा ब्रह्म ऋषि श्री कुमार स्वामी जी का सान्निध्य, जिनकी उपस्थिति ने पूरे कार्यक्रम में एक गंभीर आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार किया। मंच पर जूना पीठाधीश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज, स्वामी ज्ञानानंद जी, केंद्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल जी, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी और अनेक विशिष्ट संत एवं गणमान्य व्यक्तियों ने एक साथ मिलकर गीता की सार्वभौमिक शिक्षाओं पर विचार साझा किए। यह दृश्य केवल एक धार्मिक आयोजन का नहीं था, बल्कि भारतीय समाज को जोड़ने वाली आध्यात्मिक परंपरा की सामूहिक प्रस्तुति का भी प्रतीक बना। सम्मेलन में वक्ताओं ने गीता के मार्गदर्शन को आज के सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में अत्यंत प्रासंगिक बताया। जगतगुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि गीता केवल एक ग्रंथ नहीं, जीवन का शाश्वत विज्ञान है जो मनुष्य को कर्तव्य, संयम, समभाव और आत्मबोध की दिशा में आगे बढ़ाता है। उन्होंने यह भी कहा कि जब समाज अपने मूल आध्यात्मिक मूल्यों से जुड़ता है, तभी राष्ट्र सशक्त होता है। स्वामी अवधेशानंद गिरि जी महाराज ने गीता के निष्काम कर्म को आज की सामाजिक चुनौतियों का समाधान बताते हुए कहा कि गीता हमें समझाती है कि मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है कर्म करते हुए भी अहंकार त्याग देना। स्वामी ज्ञानानंद जी ने युवाओं में गीता-चिंतन के बढ़ते प्रभाव को उत्साहजनक बताते हुए कहा कि यह परिवर्तन भारतीय आध्यात्मिक चेतना का पुनर्जागरण है। केंद्रीय मंत्री श्री मनोहर लाल ने गीता महोत्सव को भारत की सांस्कृतिक धरोहर का उत्सव बताते हुए कहा कि यह एक ऐसा मंच है जहां संत, विद्वान और जनप्रतिनिधि एक साथ बैठकर समाज के कल्याण का मार्ग निकालते हैं। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी जी ने कहा कि गीता की शिक्षा न केवल धार्मिक है, बल्कि शासन-प्रशासन और नेतृत्व के लिए भी उतनी ही उपयोगी है। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में उपस्थित श्रद्धालुओं ने संतों के प्रवचनों को ध्यानपूर्वक सुना। वातावरण में शांति, श्रद्धा और आध्यात्मिक उर्जा का अद्भुत संगम दिखाई दिया। मंच से उठती गीता की ध्वनि और संतों के चिंतन ने कुरुक्षेत्र को एक बार फिर उस पवित्र भूमि के रूप में स्थापित किया जहां से धर्म, ज्ञान और कर्तव्य का संदेश दुनिया तक पहुंचा। अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में आयोजित यह विराट संत सम्मेलन न केवल आध्यात्मिक विमर्श का अवसर बना, बल्कि भारतीय संस्कृति की एकजुटता और उसकी वैश्विक प्रासंगिकता का भी प्रमाण प्रस्तुत करता है।

जगद्गुरु कुमार स्वामी जी की दैवीय शक्ति से मंत्रमुग्ध आचार्य प्रमोद कृष्णम “ऐसी दिव्य ऊर्जा राष्ट्र की अमूल्य धरोहर”

श्री कल्कि महोत्सव के संदर्भ में एक विशेष आध्यात्मिक मुलाकात उस समय इतिहास का हिस्सा बन गई, जब श्री कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम जी और चेतन ज्योति आश्रम के पीठाधीश्वर स्वामी ऋषिशानंद जी, अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु महा ब्रह्म ऋषि श्री कुमार स्वामी जी को व्यक्तिगत रूप से निमंत्रण देने पधारे। यह भेंट केवल एक औपचारिकता नहीं थी, बल्कि दो महान आध्यात्मिक परंपराओं का अद्वितीय संगम बनकर सामने आई।

मुलाकात के दौरान जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी द्वारा रचित महाग्रंथ दैवव्यपाश्रय को आचार्य प्रमोद कृष्णम जी ने श्रद्धापूर्वक स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि यह ग्रंथ केवल अध्यात्म का दस्तावेज नहीं, बल्कि मानव चेतना को दिशा देने वाला प्रकाशपुंज है। ग्रंथ को ग्रहण करते हुए उन्होंने इसकी गहनता, वैज्ञानिक दृष्टि और दैवीय प्रेरणा की खुलकर प्रशंसा की। भेंट के पश्चात भारत श्री से बातचीत में आचार्य प्रमोद कृष्णम जी ने अत्यंत प्रभावी और स्पष्ट शब्दों में कहा कि जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी की दैवीय शक्ति अद्वितीय है और उनके व्यक्तित्व में अपार आध्यात्मिक ऊर्जा निहित है। उन्होंने यह भी कहा कि ऐसे संत किसी युग में दुर्लभ होते हैं, और राष्ट्र को चाहिए कि वे उन्हें एक धरोहर की तरह सहेजकर रखे, क्योंकि उनका ज्ञान, तप और साधना समाज के लिए अमूल्य है।

स्वामी ऋषिशानंद जी ने भी इस भेंट को ऐतिहासिक और प्रेरणादायक बताते हुए कहा कि जब बड़े संत और महान पीठ एक साथ बैठते हैं, तभी राष्ट्र का आध्यात्मिक भविष्य अधिक मजबूत होता है। श्री कल्कि महोत्सव के लिए दिया गया यह निमंत्रण, दोनों परंपराओं के सहयोग और एकता का प्रतीक माना जा रहा है। मुलाकात के दौरान आध्यात्मिक विषयों पर विस्तृत संवाद हुआ, जिसमें धर्म, समाज और भविष्य की पीढ़ी को लेकर मार्गदर्शन और विचारों का आदान-प्रदान हुआ। संत परंपरा में कहा जाता है कि जब शक्तियां एकजुट होती हैं, तो संस्कृति और राष्ट्र दोनों सुदृढ़ होते हैं। आज की यह भेंट उसी प्रक्रिया का एक उज्ज्वल उदाहरण बनी। यह कार्यक्रम इस बात का संकेत है कि आने वाला श्री कल्कि महोत्सव केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि



आध्यात्मिक नवजागरण का केंद्र बनने जा रहा है, जहां देश के शीर्ष संत एक मंच पर एकत्र होकर मानवता के हित में विचार और दिशा प्रदान करेंगे।

सरकारी विज्ञापन का साया

टैक्स के पैसों की वह राह, जहाँ करोड़ों बिना शोर के निकल जाते हैं

@ सौम्या चौबे

सुबह के सात बजे हैं। पुरानी दिल्ली की तंग गलियों में चाय की भाप उठ रही है। रमेश अपनी दुकान खोलते हुए अखबार उठाता है। पहले पन्ने पर इस बार भी वही चमकीला सरकारी विज्ञापन चिपका है। एक योजना, एक वादा, एक मुस्कुराता चेहरा। कुछ पलों के लिए उसे लगता है कि यह सरकार की सूचना है, जनता तक संदेश पहुँचना जरूरी है। लेकिन तभी मन में एक छोटी-सी टीस उठती है—आखिर इतने महँगे विज्ञापन छपते किसके पैसों से हैं?

रमेश अकेला नहीं है। यह सवाल हर उस भारतीय के दिल में उठता है जो टैक्स भरता है लेकिन बदले में अपनी गलियों की टूटी सड़कें, भीड़ भरी बसें और दवाइयों की कमी झेलता है। यह लेख उसी सवाल की पड़ताल है। एक शांत, परंतु विशाल खर्च की कहानी जिसे हम अक्सर देख तो लेते हैं, समझ नहीं पाते।

40 करोड़ से ऊपर का खेल

साल 2023-24 में दिल्ली में कुल 118 अखबारों और पत्रिकाओं को, करीब 40 करोड़ 65 लाख रुपये के सरकारी विज्ञापन दिए गए। कागजी रूप से यह सूचना प्रसार है, लेकिन गहराई में देखें तो यह एक बड़ा आर्थिक प्रवाह है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि-118 में से केवल दो अंग्रेजी अखबार-हिंदुस्तान टाइम्स और टाइम्स ऑफ इंडिया-पूरे बजट का लगभग 46% ले गए।

इन दो अखबारों को अकेले 18 करोड़ 75 लाख रुपये दिए गए। बाकी 116 अखबार-हिंदी, उर्दू, पंजाबी, छोटे क्षेत्रीय संस्करण-बचे हुए आधे पैसों में हिस्सेदारी बाँटते रहे। इसके विपरीत, शीर्ष 10 अखबारों में से 6 हिंदी के हैं, फिर भी उन्हें कुल मिलाकर लगभग 15.90 करोड़ रुपये ही मिले। यह असंतुलन अपने आप में बताता है—खर्च केवल सूचना नहीं, बल्कि “प्राथमिकताओं” का खेल भी है।

और कितना पैसा बहने वाला है?

अब सरकार ने प्रिंट मीडिया विज्ञापन दरों में 26% की सीधी वृद्धि कर दी है। अगर 2023-24 के खर्च को आधार मानें, तो इस बढ़ोतरी के बाद दिल्ली में अखबारों को 10 करोड़ 56 लाख 93 हजार 295 रुपये अतिरिक्त मिलेंगे। यानी सिर्फ दिल्ली का प्रिंट मीडिया विज्ञापन खर्च 50 करोड़ रुपये पार कर जाएगा। दिल्ली जैसा शहर जहाँ, सरकारी स्कूल संसाधनों की कमी बताते हैं, अस्पतालों में लंबी लाइनें लगती हैं, पार्किंग, पानी और प्रदूषण रोज के मुद्दे हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर तस्वीर और भी चोड़ी है

यह कहानी केवल दिल्ली तक सीमित नहीं है। पूरे



देश में सरकारी विज्ञापन का बजट तेजी से बढ़ा है। भारत सरकार का DAVP (Directorate of Advertising and Visual Publicity) सरकारी अभियानों के लिए देशभर में विज्ञापन जारी करता है। आँकड़े बताते हैं कि 2021-22 में प्रिंट विज्ञापन खर्च लगभग 1 अरब 22 करोड़ 31 लाख आया था, 2023-24 में प्रिंट विज्ञापन खर्च लगभग 2 अरब 59 करोड़ 33 लाख 77 हजार 869 रुपये था। अब इस पर भी 26% की बढ़ोतरी लागू की जा रही है। यानी आने वाले समय में यह राशि और बढ़ेगी। और बढ़ोतरी भी ऐसी कि जनता को उसकी भनक तक मुश्किल से लगेगी।

कैसे मिले कितना और क्यों?

प्रिंट मीडिया एक कठिन दौर से गुजर रहा है। डिजिटल न्यूज की तेज रफ्तार, कागज और छपाई की महँगी लागत, और विज्ञापन बाजार की अस्थिरता के बीच

सरकारी विज्ञापन अखबारों के एक सुरक्षा कवच जैसे बन गए हैं। जिन अखबारों को सरकार ज्यादा विज्ञापन देती है, वे आर्थिक रूप से मजबूत रहते हैं।

जिन्हें कम मिलता है, वे संसाधनों के लिए संघर्ष करते हैं। इसीलिए जब दो बड़े अंग्रेजी अखबार लगभग आधे बजट पर कब्जा कर लेते हैं, तो बाकी अखबारों में असंतोष, और जनता में जिज्ञासा, स्वाभाविक रूप से बढ़ती है।

टैक्स कहाँ जा रहा है?

हर नागरिक जो टैक्स देता है, वह उम्मीद करता है कि उसका पैसा बेहतर अस्पतालों, सार्वजनिक शिक्षा, सड़क निर्माण, स्वच्छ पानी, सुरक्षा व्यवस्था, महिलाओं और बच्चों की योजनाओं पर खर्च हो रहे हैं। पर जब करोड़ों रुपए विज्ञापनों में चले जाते हैं, तो लोग सहज ही पूछते हैं कि क्या यह जरूरी था?

सरकार का जवाब अक्सर यही होता है कि जनता को

योजनाओं की जानकारी देना हमारा कर्तव्य है। लेकिन सवाल जानकारी का नहीं, जानकारी पर खर्च की मात्रा का है। क्या वही जानकारी कम बजट, कम चमक-दमक, या ज्यादा संतुलित प्रचार से नहीं दी जा सकती?

सत्ता के पक्ष में काम करने का आरोप

दुनियाभर में माना जाता है कि सरकारी विज्ञापन राजनीति को प्रभावित करते हैं। जब सरकार अपनी योजनाएँ दिखाती है, वह एक तरह से अपनी उपलब्धियाँ प्रचारित कर रही होती है। कभी-कभी यह प्रचार चुनावी माहौल में सत्ता के पक्ष में काम करने के आरोपों को भी जन्म देता है। इसलिए कई देशों में विज्ञापन व्यय की कड़ी निगरानी और सीमा तय की गई है। भारत में भी इस पर बहस होती रहती है, पर व्यावहारिक रूप से खर्च हर साल बढ़ ही रहा है। क्या यह खर्च कम किया जा सकता है? बिलकुल। लेकिन इसके लिए कुछ सिद्धांत अपनाने होंगे। विज्ञापन व्यय की ऊपरी सीमा तय हो। सभी मीडिया प्लेटफॉर्म को समान अवसर मिले। विज्ञापनों का राजनीतिक उपयोग न हो। बजट आवंटन में पारदर्शिता हो। सूचना को सरल, सस्ती और प्रभावी तरीके से पहुँचाया जाए।

इन्हें अपनाकर करोड़ों रुपये बचाए जा सकते हैं। जो जनता की वास्तविक जरूरतों पर लगाए जा सकते हैं।

चाय ठंडी हो चुकी है। रमेश अखबार मोड़ता है और सोचता है कि अगर सरकार अपनी छवि दिखाने पर इतना पैसा खर्च कर रही है, तो मेरी गली की टूटी सड़क, मेरे बच्चे के स्कूल में टूटी कुर्सियाँ, और मेरे मोहल्ले के अस्पताल में दवाइयों की कमीकब पूरी होगी? रमेश का यह सवाल उसी विज्ञापन के नीचे दबा रहता है—जिस पर करोड़ों रुपये खर्च हुए हैं। लेकिन यह सवाल गायब नहीं होता। वह हर नागरिक के भीतर धीरे-धीरे जागता है—और याद दिलाता है कि सरकारें जनता के लिए हैं, और जनता का पैसा जिम्मेदारी से खर्च होना चाहिए। सरकारी विज्ञापन पूरी तरह गलत नहीं है। सूचना देना जरूरी है लेकिन संतुलन भी जरूरी है।

मदनी बोले जिहाद जुल्म के खिलाफ लड़ाई, भाजपा ने कहा- यह सीधी धमकी

@ मनीष पांडेय

शनिवार की दोपहर दिल्ली में उस समय हलचल मच गई जब जमीयत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी मंच पर आए। भीड़ शांत थी, लेकिन हवा में बेचैनी तैर रही थी। देश के हालात, समाज के बीच बढ़ती दूरियां और लगातार चल रही बहसों के बीच सबको इंतजार था कि मदनी आज क्या कहेंगे। मंच पर आते ही उन्होंने पहला वाक्य बोला जिहाद का मतलब लड़ाई नहीं, जुल्म के खिलाफ खड़े होना है। बस इतना कहना था, और देश की राजनीति में मानो एक नया धागा खुल गया।

जिहाद की परिभाषा पर मदनी का बयान

मदनी ने कहा कि जिहाद शब्द को जानबूझकर गलत तरीके से पेश किया जा रहा है। उनका दावा था कि इस्लाम के दुश्मनों ने इस शब्द को गाली में बदल दिया है - जबकि असल में यह ईसाफ की राह पर चलने का नाम है।

उन्होंने कहा कि लव जिहाद, लैंड जिहाद, तालीम जिहाद, थूक जिहाद ये शब्द ईसाफ नहीं, नफरत फैलाने के लिए गढ़े गए हैं। धर्म का अपमान करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल हो रहा है, और दुख यह है कि सरकार और मीडिया में बैठे लोग भी इन्हें बेझिझक बोलते हैं। सभा में बैठे लोग सिर झुकाकर सुनते रहे। मदनी की आवाज धीरे-धीरे तेज होती गई।

उन्होंने कहा कि इस्लाम में जिहाद कई रूपों में आता है। अपने फर्ज को निभाने का संघर्ष, समाज और ईसायित के लिए काम करना और अगर मजबूरी हो जाए तो जुल्म के खिलाफ लड़ाई। और फिर उन्होंने वह वाक्य कहा जिसे सुनते ही पूरा देश चर्चा में आ गया जब-जब जुल्म होगा जिहाद होगा।

“अदालतें दबाव में काम कर रही हैं”

मौलाना यहीं नहीं रुके। इसके बाद उन्होंने सीधे-सीधे सुप्रीम कोर्ट पर सवाल उठा दिए। एक शांत, धीमी पर कटु आवाज में उन्होंने कहा कि आज देश में डर का माहौल है। सुप्रीम कोर्ट सरकार के दबाव में काम कर रहा है। बाबरी मस्जिद, तीन तलाक—पिछले कुछ फैसलों ने कोर्ट के चरित्र को संदेह के घेरे में खड़ा कर दिया है।

उनका कहना था कि संविधान ने हर नागरिक को धर्म चुनने की आजादी दी है, लेकिन धर्म परिवर्तन कानूनों का इस्तेमाल एक खास समुदाय को डराने के लिए किया जा रहा है। उन्होंने आरोप लगाया घर वापसी करने वालों को छूट है, उनसे कोई सवाल नहीं पृष्ठता। लेकिन अगर कोई अपना धर्म चुन ले, तो उसे अपराधी बना दिया जाता है। यह सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया। मदनी हर शब्द औजार की तरह इस्तेमाल कर रहे थे।

“देश के हालात चिंताजनक हैं”

अपने भाषण के बीच मदनी ने एक लंबी सांस ली, फिर कहा कि यह समय बहुत संवेदनशील है। मुसलमान खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं।



वक्फ की जमीनों पर कब्जा किया जा रहा है, मदरसों को निशाना बनाया जा रहा है,

मॉब लिंग और बुलडोजर एक्शन से माहौल और डरावना बना है। सभा में बैठे बुजुर्गों की आंखें भर आईं। कई लोगों ने चुपचाप अपनी दाढ़ी सहलाई—हर शब्द घाव की तरह लगता था।

“यह सीधी धमकी है”

मदनी के बयान के कुछ मिनट बाद ही राजनीति की दूसरी धारा सक्रिय हो गई।

दिल्ली भाजपा के प्रवक्ता यासर जिलानी सामने आए और उन्होंने तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि मदनी राजनीतिक व्यक्ति हैं। वह जिहाद की परिभाषा बताते-बताते अचानक कह देते हैं— अगर हम पर जुल्म हुआ तो जिहाद होगा। यह क्या है? किसको धमका रहे हैं? भारत सरकार को? जिलानी ने चेतावनी देते हुए कहा कि इस तरह की धमकी मत दो। प्रधानमंत्री सबके लिए काम करते हैं।

मदनी देश का माहौल खराब करने की कोशिश कर रहे हैं। इसके बाद सोशल मीडिया पर बहस तूफान की तरह चल पड़ी। कुछ लोग कह रहे थे कि मदनी ने सच कहा, कुछ कह रहे थे कि यह धमकी है, और कुछ यह पूछ रहे थे कि जिहाद पर चर्चा इतनी बार क्यों होती है?

एक शब्द, दो भावनाएं — किसका सच सही?

इस बहस के केंद्र में एक शब्द है—जिहाद। मदनी ने इसे जुल्म के खिलाफ लड़ाई बताया। विरोधियों



जताया गया। और थूक जिहाद जैसे शब्दों ने पूरे समुदाय को बदनाम किया। उनका आरोप था कि यह सोच समाज को बांट रही है। दूसरी तरफ भाजपा का कहना है कि इस तरह के बयान देश में तनाव बढ़ाते हैं और यह धमकी की भाषा है।

बयानबाजी से ज्यादा कुछ और है यह कहानी

जो हुआ वह सिर्फ बयान नहीं था। यह देश के दो बड़े भावनात्मक समूहों की टकराहट जैसा था। मदनी ने अपने समुदाय की चिंता जताई, अदालतों पर सवाल खड़े किए,

नए कानूनों की आलोचना की, और जिहाद की धार्मिक परिभाषा समझाई।

भाजपा ने इसे राजनीतिक चाल बताया, सांप्रदायिक सौहार्द को खतरा बताया। और इसे देश को धमकाने की कोशिश कहा। यह कहानी सिर्फ एक

भाषण की नहीं थी यह उस माहौल की कहानी थी। जिसमें शब्द भी हथियार बन जाते हैं। शनिवार की दोपहर से उठी बहस की आग अभी ठंडी नहीं होगी। मदनी का पूरा भाषण विरोधियों को रास नहीं आया।

ने इसे राजनीतिक धमकी बताया। दोनों जैसे अपने-अपने सच लेकर खड़े थे।

एक शब्द की लड़ाई क्यों बढ़ती जा रही है?

यह सवाल इस पूरी कहानी का केंद्र है। मदनी कहते हैं कि जिहाद को गलत मतलब दिया गया। उनके अनुसार लव जिहाद कहकर प्यार को संदिग्ध बना दिया गया। लैंड जिहाद कहकर जमीन की खरीद पर उंगली उठाई गई। तालीम जिहाद कहकर शिक्षा पर शक

भाजपा का जवाब और तीखा था। सोशल मीडिया दो हिस्सों में बंट गया। किसी ने इसे सच कहने की हिम्मत बताया, तो किसी ने इसे डर फैलाने की साजिश कहा। लेकिन एक बात साफ है एक शब्द जिहाद ने फिर से राष्ट्रीय बहस को जगा दिया है।

भाई और मां ने मिलकर बेटी की हत्या की खौफनाक दास्तान

@ आनंद मीणा

13 दिन पुराने शव की पहचान ने खोला ऐसा राज कि पुलिस भी चौंक गई। अपनी ही बेटी को मारकर कार से कुचलकर फेंक दिया, दो गिरफ्तार, तीसरा आरोपी तलाश में।

गोंडा: तरबगंज की हवा में उस दिन एक अजीब सा बोझ था। 17 नवंबर की सुबह जब पीडी बंधे के किनारे लोगों ने सड़क पर बुरी तरह कुचला हुआ एक युवती का शव देखा, तो किसी को अंदाजा नहीं था कि यह हत्या की कहानी दूर कहीं नहीं, एक घर की चारदीवारी के भीतर पनपी थी— धीरे-धीरे, खामोशियों में सुलगती हुई। शुरू में शव देखकर लगा कि शायद यह सड़क दुर्घटना है। लेकिन पोस्टमार्टम ने पहला ताला खोल दिया। मौत कार से कुचलने से नहीं, गला घोटने से हुई थी। यानी यह एक्सीडेंट नहीं, सोची-समझी हत्या थी। लेकिन किसकी? क्यों? और कहां से आई यह लाश? पुलिस के लिए यह सवाल किसी घने जंगल जितने उलझे हुए थे।

एक लड़की लापता थी, पर किसी ने रिपोर्ट नहीं लिखाई

कई जिलों में गुमशुदा लड़कियों की तलाश करते हुए पुलिस की नजर बस्ती के वाल्टरगंज इलाके के परसाजागीर गनेशपुर पर गई। गांव में धीरे-धीरे चर्चा थी कि एक लड़की गायब है, लेकिन घरवालों ने रिपोर्ट नहीं लिखाई थी। यही बात एसपी विनीत जायसवाल को खटक गई। सर्विलांस टीम को उसके परिवार की गतिविधियों पर लगाया गया। दूसरी ओर तरबगंज से अयोध्या, बस्ती और नवाबगंज तक लगे सीसीटीवी कैमरों की जांच चल रही थी। रात के फुटेज में एक सफेद कार संदिग्ध तरीके से घूमती दिखी। यह कार कई क्षेत्र की सीमाओं को पार कर रही थी जैसे किसी राज को दफनाने के लिए रास्ता ढूँढ़ रही हो जब उसका नंबर मिला, पुलिस के हाथ पहली ठोस कड़ी आई।

मां-बेटा दोनों ने मिलकर किया कत्ल

रविवार को पुलिस ने उस कार के मालिक मनीष और उसकी मां निर्मला देवी को वाल्टरगंज थाने के पास से उठा लिया। शुरू में दोनों चुप रहे, पर जब पुलिस ने उनके सामने 48 घंटे की गतिविधियों की पूरी डिजिटल कहानी रखी वे टूट गए। और फिर शुरू हुई उस रात की सच्ची कहानी जो किसी भी परिवार के दिल को कंपा दे।

एक फोन कॉल ने बहन की सांसें छीन लीं

16 नवंबर की देर रात मनीष गोरखपुर से घर लौटा था। जैसे ही कमरे में पैर रखा, उसने अपनी छोटी बहन को मोबाइल पर किसी लड़के से हंसकर बात करते देखा। इतनी सी बात ने उसके भीतर उबाल भर दिया। मनीष ने बहन का फोन छीनकर जमीन पर पटक, उसे तोड़ दिया।

मां निर्मला भी गुस्से में बोली— कितनी बार मना किया है, फिर भी नहीं मानती! माहौल पिघलने की जगह और



कठोर हो गया।

गुस्से में अंधा मनीष बहन को पीटने लगा। बात इतनी बढ़ी कि वह खुद पर काबू नहीं रख पाया। उसने रस्सी उठाई, बहन के हाथ-पैर बांध दिए, उसे एक बड़े बोरे में डाला और मुंह कसकर बांध दिया। शरीर सिर्फ 20 साल का था, लेकिन बोरा असहनीय रूप से भारी लग रहा था। शायद इसलिए कि उसके अंदर सिर्फ एक शरीर नहीं, एक पूरा जीवन था।

कार की डिवकी में बंद जिंदगी

बोरा कार की डिवकी में रखा गया। मां और बेटा दोनों अब इस हिंसक गलती में बराबर के हिस्सेदार बन चुके थे। फिर मनीष ने अपने मामा के बेटे मुस्कान को फोन किया। तीनों मिलकर कुछ सुलझाने निकले, लेकिन अंधेरे रास्तों पर सच सिर्फ और भयानक होता गया। गाड़ी गांव से निकलकर निर्जन स्थान की ओर जाती रही। रात की

खामोशी और डिवकी में बंद सांसें एक भयानक संयोजन।

रास्ते में लिया गया सबसे खतरनाक फैसला

मामा के गांव पहुंचने से पहले मनीष ने कार रोकी। उसने डिवकी खोली, बोरे को बाहर निकाला। बहन तब भी सांसें ले रही थी—कमजोर, टूटी हुई, लेकिन जीवित। लेकिन गुस्से की आग बुझती नहीं, भड़कती है।

मनीष ने वही रस्सी उठाई और बहन का गला दबा दिया। मां इस सबकी गवाह बनी रही। यहीं उस लड़की की जिंदगी की आखिरी सांसें बुझ गईं।

रात का सबसे डरावना अध्याय

इसके बाद मां को मामा के घर उतारा गया। मनीष अपने ममेरे भाई मुस्कान को लेकर आगे बढ़ा। कार के रास्ते बदलते रहे।

अकबरपुर-टांडा बंद था, फिर गाड़ी दुबौलिया,

विशेश्वरगंज, नवाबगंज होते हुए चली। नवाबगंज में पेट्रोल भरवाया गया, ताकि अंतिम काम बिना रुकावट हो सके।

और फिर तरबगंज के पीडी बंधे मार्ग पर गाड़ी रुकी— जहां चारों ओर सन्नाटा था।

डिवकी खुली। शरीर निकाला गया। सड़क पर फेंका गया। और फिर—कार तेजी से शव पर चढ़ाई गई ताकि पुलिस इसे दुर्घटना समझ ले। मनीष और मुस्कान वापस लौटे। घर लौटते हुए उनके हाथ कांपे नहीं; शायद अपराध का बोझ धीरे-धीरे सुन्न कर देता है।

टुकड़ों से जोड़ी गई हत्या की पूरी कहानी

पोस्टमार्टम ने बताया कि लड़की की मौत पहले ही हो चुकी थी, कुचलना बाद में किया गया। यह पहला झटका था। सीसीटीवी ने कार के रास्ते बताए।

मोबाइल लोकेशन ने रात की दिशा बताई। गुमशुदगी की चर्चा ने नाम बताया। कार ने कहानी पूरी कर दी। रविवार को पुलिस ने मां-बेटे को गिरफ्तार कर लिया।

कार बरामद कर ली गई। ममेरे भाई मुस्कान की तलाश जारी है। एसपी ने खुलासा करने वाली टीम को 25 हजार रुपये इनाम भी दिया।

यह हत्या, हत्या से कहीं ज्यादा है

यह सिर्फ एक क्राइम स्टोरी नहीं यह उस सोच का प्रतिबिंब है जहां गुस्सा, अहंकार और नियंत्रण रिश्तों को निचोड़कर खून में बदल देते हैं। एक बहन जिसने कॉलेज में पढ़ने के सपने देखे। एक मां जिसने बेटी की जगह बेटे की हिंसा चुनी। एक भाई जिसने समझाइश की जगह मौत चुनी। तरबगंज का यह मामला एक चेतावनी है कि घर की चारदीवारी अगर गलत सोच में बदल जाए, तो सबसे सुरक्षित जगह भी सबसे डरावनी बन सकती है।

मन बहुत सोचता है

मन बहुत सोचता है कि उदास न हो
पर उदासी के बिना रहा कैसे जाए?

शहर के दूर के तनाव-दबाव कोई सह भी ले,
पर यह अपने ही रचे एकांत का दबाव सह कैसे जाए!

नील आकाश, तैरते-से मेघ के टुकड़े,
खुली घास में दौड़ती मेघ-छायाएँ,

पहाड़ी नदी : पारदर्श पानी,
धूप-धुले तल के रंगारंग पत्थर,

सब देख बहुत गहरे कहीं जो उठे,
वह कहूँ भी तो सुनने को कोई पास न हो—

इसी पर जो जी में उठे वह कहा कैसे जाए!
मन बहुत सोचता है कि उदास न हो, न हो,

पर उदासी के बिना रहा कैसे जाए!

वसीयत

मेरी छाती पर
हवाएँ लिख जाती हैं

महीन रेखाओं में
अपनी वसीयत

और फिर हवाओं के झोंके ही
वसीयतनामा उड़ा कर

कहीं और ले जाते हैं।
बहकी हवाओ! वसीयत करने से पहले

हलफ़ उठाना पड़ता है
कि वसीयत करने वाले के

होश-हवास दुरुस्त हैं :
और तुम्हें इसके लिए

गवाह कौन मिलेगा
मेरे ही सिवा?

क्या मेरी गवाही
तुम्हारी वसीयत से ज्यादा टिकाऊ होगी?

अज्ञेय

समादृत कवि-कथाकार-अनुवादक और संपादक। भारतीय ज्ञानपीठ से सम्मानित

कर्नाटक कांग्रेस का संकट: शिवकुमार की सीएम जिद से सुलग रही सत्ता

कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार को सत्ता में आए डेढ़ साल ही हुए हैं, लेकिन अब अंदरूनी कलह ने सबको चौंका दिया है। मई 2023 के विधानसभा चुनावों में जब कांग्रेस ने शानदार जीत हासिल की, तो सिद्धारमैया को मुख्यमंत्री बनाया गया और डीके शिवकुमार को उपमुख्यमंत्री का पद दिया गया। लेकिन इसी के साथ एक मौखिक समझौता हुआ था, जिसमें कहा गया कि दो साल बाद सत्ता का बंटवारा होगा। यानी नवंबर 2025 तक आते-आते शिवकुमार को मुख्यमंत्री की कुर्सी मिलनी थी। अब वही वादा विवाद का कारण बन गया है। शिवकुमार और उनके समर्थक लगातार कह रहे हैं कि पार्टी हाई कमांड को अपना वचन निभाना चाहिए। वहीं सिद्धारमैया का कहना है कि उन्होंने कभी ऐसा कोई लिखित वादा नहीं किया और पूरी पांच साल की मुद्दा चलानी है। इस बीच, वोकालिगा समुदाय के कुछ संतों ने भी शिवकुमार का साथ दिया है, जिससे मामला और उलझ गया। भाजपा वाले तो खुश हैं, वे कह रहे हैं कि कांग्रेस के वादे झूठे साबित हो रहे हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि यह झगड़ा सिर्फ दो नेताओं का नहीं, बल्कि पार्टी की एकजुटता का सवाल बन गया है। अगर यह न सुलझा, तो कर्नाटक में भी हिमाचल या राजस्थान जैसी स्थिति हो सकती है, जहां कांग्रेस सरकारें गिर गईं। आज के राजनीतिक माहौल में, जहां विपक्ष हमेशा मौके की ताक में रहता है, यह संकट सरकार के लिए बड़ा खतरा है। शिवकुमार की जिद को देखते हुए लगता है कि वे पीछे नहीं हटेंगे, लेकिन सिद्धारमैया भी अपनी कुर्सी आसानी से नहीं छोड़ेंगे। यह सब देखकर आम कर्नाटकवासी सोच रहे हैं कि आखिर कब तक यह ड्रामा चलेगा। पार्टी के वरिष्ठ नेता तो कह रहे हैं कि सब ठीक हो जाएगा, लेकिन सड़क पर लोग असमंजस में हैं। कुल मिलाकर, यह संकट कांग्रेस को कमजोर करने का काम कर रहा है, और 2028 के चुनावों से पहले ही पार्टी की छवि पर बड़ा लग सकता है।

नाशते की मेज पर एकता का नाटक: क्या दिल से मिले दो नेता?

29 नवंबर 2025 की सुबह बेंगलुरु के मुख्यमंत्री आवास में एक अनोखी मुलाकात हुई। सिद्धारमैया ने डीके शिवकुमार को नाश्ते पर बुलाया, और दोनों ने मीडिया के सामने एकजुटता का संदेश दिया। यह बैठक पार्टी हाई कमांड के कहने पर हुई, जहां केसी वेणुगोपाल ने दोनों को फोन करके कहा कि दिल्ली जाने से पहले मतभेद सुलझा लो। बैठक के बाद दोनों नेताओं ने संयुक्त रूप से प्रेस से बात की। सिद्धारमैया ने कहा, "हमारे बीच कोई फर्क नहीं है, मीडिया ने ही भ्रम फैलाया है।" शिवकुमार ने भी साथ दिया, "पार्टी पहले, हम सब उसके सिपाही हैं। हाई कमांड जो कहेगी, वही मानेंगे।" उन्होंने आगामी विधानसभा सत्र और 2028 चुनावों की रणनीति पर भी चर्चा की। लेकिन क्या यह सिर्फ कैमरों के लिए था? अंदरूनी स्रोत बताते हैं कि बैठक में गहरी बातें हुईं, लेकिन कोई अंतिम फैसला नहीं। शिवकुमार ने अपनी दिल्ली यात्रा रद्द कर मंड्या में पूजा की, जबकि सिद्धारमैया भी दिल्ली नहीं गए। यह

संकट की जड़ें: 2023 की जीत के बाद वादों का बोझ



दिखावा एक तरफ तो पार्टी को मजबूत करने की कोशिश लगती है, लेकिन दूसरी तरफ सवाल उठते हैं कि आखिर इतना हंगामा क्यों? वैसे, यह पहली बार नहीं है जब दोनों ने ऐसे मिलकर संकट टाला हो। 2023 में भी सिद्धारमैया को सीएम बनाने के लिए शिवकुमार ने त्याग किया था। अब उसी त्याग की मांग कर रहे हैं। लेकिन सिद्धारमैया का तर्क है कि वर्तमान में सब ठीक चल रहा है, बदलाव से अस्थिरता आएगी। आम जनता के लिए यह अच्छा संकेत है कि नेता कम से कम बात तो कर रहे हैं, लेकिन असली परीक्षा हाई कमांड के फैसले में होगी। अगर यह एकता टिकी रही, तो कांग्रेस मजबूत होगी, वरना विपक्ष को फायदा। कुल मिलाकर, यह नाश्ता मीठा तो लगा, लेकिन पचने में वक्त लगेगा।

वादों का जाल: सत्ता बंटवारे पर सिद्धारमैया-शिवकुमार का शब्दयुद्ध

सत्ता बंटवारे का यह समझौता 2023 के चुनाव परिणामों के बाद हुआ था, जब कांग्रेस को 135 सीटें मिलीं। हाई कमांड ने फैसला किया कि सिद्धारमैया अनुभवी हैं, तो वे सीएम बनें, लेकिन शिवकुमार को बाद में मौका मिलेगा। यह मौखिक था, कोई कागज नहीं। अब शिवकुमार कह रहे हैं, "वादा तो वादा है, दो साल पूरे हो गए।" उनके समर्थक विधायक भी बगावत की धमकी दे रहे हैं। वहीं सिद्धारमैया का कहना है, "मैंने कभी 2.5 साल का वादा नहीं किया, पूरी अवधि चलानी है।" इस शब्दयुद्ध ने पार्टी में दो गुट बना दिए हैं। एक तरफ अहिंदा समुदाय के सिद्धारमैया समर्थक, दूसरी तरफ वोकालिगा शिवकुमार के साथ। कुछ संतों ने तो चेतावनी दी है कि अगर शिवकुमार को सीएम नहीं बनाया, तो सरकार गिर सकती है। भाजपा और जेडीएस वाले इस मौके का फायदा उठा रहे हैं, वे अविश्वास प्रस्ताव लाने की बात कर रहे हैं। लेकिन कांग्रेस के अंदर यह जाल

इतना उलझा है कि बाहर से सुलझाना मुश्किल। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने भी इस पर चर्चा की है। स्रोत बताते हैं कि हाई कमांड एक समझौता फॉर्मूला सोच रही है, जैसे शिवकुमार को 2028 के बाद सीएम बनाना या कोई अन्य पद। लेकिन शिवकुमार इससे संतुष्ट नहीं होंगे। यह विवाद सिर्फ पद का नहीं, बल्कि पार्टी में प्रभाव का है। शिवकुमार ने संगठन को मजबूत किया है, जबकि सिद्धारमैया की छवि सुशासन की है। अगर यह न सुलझा, तो कर्नाटक में कांग्रेस की साख दांव पर लगेगी। आम कार्यकर्ता परेशान हैं, वे कहते हैं कि नेता झगड़ें तो जनता को नुकसान। कुल मिलाकर, यह वादों का खेल अब असली परीक्षा ले रहा है, और देखना है कि कौन झुकता है।

हाई कमांड की कसौटी: दिल्ली से फैसला, लेकिन कब तक इंतजार?

कांग्रेस हाई कमांड अब इस संकट का केंद्र बिंदु बन गई है। राहुल गांधी, मल्लिकार्जुन खड़गे और केसी वेणुगोपाल ने दोनों नेताओं को साफ कह दिया है कि पार्टी हित सर्वोपरि है। वे सोमवार तक फैसला लेने का संकेत दे रहे हैं। स्रोतों के मुताबिक, एक संभावित फॉर्मूला यह है कि सिद्धारमैया अभी बने रहें, लेकिन शिवकुमार को अधिक जिम्मेदारियां दें। या फिर रोटेशनल सीएम का विचार, लेकिन यह जोखिम भरा है। वेणुगोपाल ने मीडिया को दोष देते हुए कहा कि दोनों नेता हाई कमांड पर भरोसा रखते हैं। लेकिन अंदरूनी मीटिंग्स में बहस तेज है। प्रियंक खड़गे ने भी दिल्ली में खड़गे से मुलाकात की। यह हस्तक्षेप जरूरी था, क्योंकि अगर गुटबाजी बढ़ी तो विधानसभा में सरकार अल्पमत में आ सकती है। कर्नाटक में कांग्रेस के 135 विधायक हैं, लेकिन 10-15 शिवकुमार समर्थक बगावत कर सकते हैं। हाई कमांड का फैसला न सिर्फ कर्नाटक, बल्कि पूरे देश की कांग्रेस को प्रभावित करेगा। अगर वे शिवकुमार को नजरअंदाज करेंगे, तो युवा नेतृत्व

को झटका लगेगा। वहीं सिद्धारमैया को हटाना अनुभव की हानि। भाजपा कह रही है कि कांग्रेस में अराजकता है, लेकिन हकीकत में हाई कमांड की मजबूती ही पार्टी को बचा सकती है। कार्यकर्ता उम्मीद कर रहे हैं कि जल्द फैसला हो, ताकि विकास कार्य रुकें नहीं। यह इंतजार कर्नाटक की राजनीति को नया मोड़ दे सकता है। कुल मिलाकर, दिल्ली की नजरें बेंगलुरु पर हैं, और फैसला सबको चौंका सकता है।

खतरे की घंटी: क्या कर्नाटक भी कांग्रेस के हाथ से फिसलेगा?

अब सवाल यह है कि क्या यह संकट कर्नाटक सरकार को गिरा देगा? विपक्ष तो तैयार बैठा है। भाजपा और जेडीएस अविश्वास प्रस्ताव ला सकते हैं, अगर विधायक नाराज हुए। याद कीजिए, हिमाचल और राजस्थान में भी ऐसे ही आंतरिक झगड़ों से सरकारें गिरीं। कर्नाटक में तो हाल ही में कांग्रेस ने अच्छा शासन दिखाया है, लेकिन यह कलह सब बर्बाद कर सकता है। शिवकुमार की जिद साफ है, वे सीएम पद पर अड़े हैं, लेकिन सिद्धारमैया भी पीछे नहीं हटेंगे। अगर हाई कमांड ने कोई बीच का रास्ता नहीं निकाला, तो 2028 चुनावों से पहले ही पार्टी कमजोर हो जाएगी। आम जनता को फायदा तभी होगा जब नेता एकजुट हों। वोकालिगा और अहिंदा समुदायों के बीच तनाव भी बढ़ सकता है। लेकिन सकारात्मक पक्ष यह है कि दोनों नेता परिपक्व हैं, वे पार्टी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। फिर भी, यह संकट कांग्रेस को सोचने पर मजबूर कर रहा है कि सत्ता संभालने के तरीके बदलने चाहिए। क्या मौखिक वादे काफी हैं? या लिखित समझौते जरूरी? कर्नाटक जैसे महत्वपूर्ण राज्य को खोना राष्ट्रीय स्तर पर झटका होगा। कार्यकर्ता प्रार्थना कर रहे हैं कि शांति बने रहे। कुल मिलाकर, खतरा है, लेकिन उम्मीद भी। देखना है कि अगले दिन क्या होता है।

बीसीसीआई की अहम बैठक

विराट-रोहित का भविष्य 2027 वर्ल्ड कप तक साफ होगा, फिटनेस पर सख्ती और घरेलू क्रिकेट को बढ़ावा

बीसीसीआई ने विराट कोहली और रोहित शर्मा के क्रिकेट करियर के भविष्य पर एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई है। यह बैठक 30 नवंबर 2025

को विशाखापट्टनम में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीसरे वनडे मैच के बाद अहमदाबाद में होगी। इसमें मुख्य कोच गौतम गंभीर, मुख्य चयनकर्ता अजीत आगरकर और बोर्ड के शीर्ष अधिकारी शामिल होंगे। बोर्ड का कहना है कि दोनों खिलाड़ियों को उनके रोल के बारे में स्पष्टता देना जरूरी है, ताकि वे अनिश्चितता में न खेलें। एक बोर्ड स्रोत ने कहा, “रोहित और कोहली जैसे बड़े खिलाड़ियों को यह पता होना चाहिए कि प्रबंधन उनसे क्या उम्मीद करता है।” यह बैठक 2027 वनडे वर्ल्ड कप को ध्यान में रखकर बुलाई गई है, जहां दोनों को बैटिंग की रीढ़ माना जा रहा है। हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीरीज में दोनों ने शुरुआती दो मैचों में संघर्ष किया था, हालांकि तीसरे में कोहली ने 74 रन बनाए। बोर्ड चिंतित है कि ऐसी रस्तेनस हर सीरीज में बर्दाश्त नहीं की जा सकती। रोहित को सलाह दी गई है कि वे फिटनेस और परफॉर्मेंस पर ध्यान दें, न कि अफवाहों पर प्रतिक्रिया दें। बैठक में उनके वनडे फ्यूचर पर खुलकर चर्चा होगी, जिसमें अगली सीरीज जैसे न्यूजीलैंड के खिलाफ जनवरी 2026 और इंग्लैंड दौरे जुलाई 2026 को शामिल किया जाएगा। यह कदम भारतीय क्रिकेट के लिए एक नया दौर शुरू करने जैसा है, जहां अनुभवी खिलाड़ियों को युवाओं के साथ जोड़ने की कोशिश हो रही है। क्या यह बैठक दोनों को नई ऊर्जा देगी या बदलाव लाएगी? समय ही बताएगा, लेकिन फैस की नजरें इस पर टिकी हैं।

फिटनेस का दबाव: 2027 तक की योजना कैसे बनेगी?

विराट कोहली और रोहित शर्मा की फिटनेस अब बीसीसीआई की प्राथमिकता बन गई है। बोर्ड 2027 वर्ल्ड कप तक उनके लिए एक सख्त फिटनेस प्लान तैयार करने की सोच रहा है, जिसमें नियमित चेकअप और ट्रेनिंग शामिल होगी। हाल की ऑस्ट्रेलिया सीरीज में दोनों ने दिखाया कि लंबे ब्रेक के बाद रिदम पकड़ना मुश्किल होता है। कोहली ने पहले दो मैचों में शून्य रन बनाए, जबकि रोहित ने सतर्क बल्लेबाजी की, जो उनकी आक्रामक शैली से अलग थी। बोर्ड का मानना है कि वर्ल्ड कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में ऐसी शुरुआत मंहगी

बैठक का ऐलान: क्या तय होगा विराट-रोहित का सफर?

पड़ सकती है। एक अधिकारी ने कहा, “हर सीरीज में ऐसा रस्ते होना बर्दाश्त नहीं।” रोहित को खास तौर पर निर्देश दिया गया है कि वे फिटनेस पर फोकस करें और भविष्य की अटकलों से दूर रहें। दोनों टी20आई से संन्यास ले चुके हैं, जिससे उनका शेड्यूल सीमित हो गया है, लेकिन वनडे में वे अभी भी टीम के स्तंभ हैं। बैठक में फिटनेस को मॉनिटर करने के लिए विशेषज्ञों की टीम बनाने पर विचार होगा, जो महीने-दर-महीने रिपोर्ट देगी। युवा खिलाड़ियों को सपोर्ट करने के लिए दोनों को आक्रामक बैटिंग जारी रखनी होगी, जैसे रोहित ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में किया था। अगर फिटनेस में कमी आई, तो बैकअप प्लेयर्स जैसे शुभमन गिल को मौका मिल सकता है। यह प्लान न सिर्फ व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि टीम की समग्र ताकत बढ़ाने के लिए है। क्या दोनों इस चुनौती को स्वीकार करेंगे? यह सवाल क्रिकेट प्रेमियों के मन में है, जो उनके समर्पण पर भरोसा करते हैं।

घरेलू क्रिकेट पर जोर: विजय हजारे ट्रॉफी बनेगी टेस्टिंग ग्राउंड

बीसीसीआई अब विराट और रोहित से घरेलू क्रिकेट में ज्यादा भागीदारी की उम्मीद कर रहा है,

खासकर विजय हजारे ट्रॉफी में। बोर्ड का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय मैचों के बीच गैप को भरने के लिए घरेलू टूर्नामेंट जरूरी हैं। अगले महीने शुरू हो रही विजय हजारे ट्रॉफी में दोनों को खेलने की सलाह दी जाएगी, ताकि मैच रेडीनेस बनी रहे। एक स्रोत ने बताया, “काउंटी क्रिकेट की तरह घरेलू लीग उन्हें शाप रखेगी।” साल की शुरुआत में बोर्ड ने इंग्लैंड काउंटी में खेलने का सुझाव दिया था, लेकिन अब फोकस घरेलू पर है। यह कदम 2027 वर्ल्ड कप की तैयारी का हिस्सा है, जहां फॉर्म बनाए रखना अहम होगा। रोहित और कोहली जैसे सीनियर प्लेयर्स के घरेलू क्रिकेट में उतरने से युवा खिलाड़ी प्रेरित होंगे और राज्य टीमों को मजबूती मिलेगी। हालांकि, कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि इतना लोड उनके इंटरनेशनल परफॉर्मेंस को प्रभावित कर सकता है। बैठक में इस पर संतुलन बनाने की चर्चा होगी, जैसे सीमित मैच चुनना। फैस इस सकारात्मक मान रहे हैं, क्योंकि इससे क्रिकेट का आधार मजबूत होगा। क्या यह बदलाव भारतीय क्रिकेट को नई दिशा देगा? घरेलू क्रिकेट को बढ़ावा

बोर्ड लंबे समय की सोच दिखा रहा है, जो खिलाड़ियों के करियर को सस्टेनेबल बनाएगा।

2027 वर्ल्ड कप की राह: उम्मीदें, चुनौतियां और बैकअप प्लान

2027 वनडे वर्ल्ड कप के लिए विराट और रोहित को टीम का केंद्र माना जा रहा है, लेकिन बोर्ड बैकअप पर भी काम कर रहा है। बैठक में एक रोडमैप बनेगा, जिसमें दोनों की बैटिंग को युवाओं का सपोर्ट करने पर फोकस होगा। रोहित को टॉप ऑर्डर में आक्रामक रहना होगा, जैसे 2023 वर्ल्ड कप में उन्होंने किया। कोहली मिडिल ऑर्डर को स्थिरता देंगे। बोर्ड ने साफ कहा है कि अगर फिटनेस बनी रही, तो दोनों खेलेंगे। लेकिन अगर नहीं, तो शुभमन गिल जैसे युवा तैयार किए जा रहे हैं। विशेषज्ञ मोर्ने मॉर्केल ने कहा, “दोनों 2027 में खेल सकते हैं, उनकी क्षमता बेमिसाल है।” हाल की सीरीज से सीख लेते हुए, बोर्ड चाहता है कि रस्तेनस न हो। अगली सीरीज न्यूजीलैंड और इंग्लैंड में फॉर्म बिल्डिंग का मौका देगा। यह प्लान टीम की गहराई बढ़ाएगा, जहां सीनियर और जूनियर साथ चलें। फैस और पूर्व खिलाड़ी इसे सही दिशा मानते हैं, लेकिन कुछ को लगता है कि जल्दबाजी न हो। क्या यह रणनीति भारत को फिर चैंपियन बनाएगी? बोर्ड का यह कदम भविष्योन्मुखी लगता है, जो अनुभव और नयापन का मिश्रण करेगा।

प्रतिक्रियाएं और बहस: फैस-विशेषज्ञों की क्या राय है?

बीसीसीआई की इस बैठक पर फैस और विशेषज्ञों की मिली-जुली प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। एक्स पर कई यूजर्स इसे ‘डर्टी गेम’ बता रहे हैं, जबकि कुछ इसे जरूरी कदम मानते हैं। एक पोस्ट में कहा गया, “रोहित-विराट 2027 तक खेलेंगे, बोर्ड को जल्दबाजी न करनी चाहिए।” पूर्व कोच मोर्ने मॉर्केल ने भरोसा जताया कि दोनों तैयार हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि फिटनेस प्लान से उनकी लंबी पारी चलेगी, लेकिन घरेलू क्रिकेट का बोझ न बढ़े। शुभमन गिल जैसे युवाओं ने कहा कि सीनियर्स से सीखना चाहते हैं। यह बहस क्रिकेट की राजनीति को भी उजागर कर रही है, जहां लेजेंड्स को सम्मान मिलना चाहिए। बोर्ड का इरादा साफ है: टीम को मजबूत बनाना। फैस उम्मीद कर रहे हैं कि बैठक सकारात्मक नतीजे देगी। क्या यह बदलाव भारतीय क्रिकेट को नई ऊंचाइयों पर ले जाएगा? समय बताएगा, लेकिन चर्चा से साफ है कि विराट-रोहित का योगदान अमूल्य है।



शंघाई एयरपोर्ट पर अरुणाचल महिला का दर्द भारत-चीन संबंधों में नया मोड़

पेमा वांगजॉम थोंगडोक नाम की एक भारतीय महिला, जो ब्रिटेन में 14 साल से रह रही हैं, 21 नवंबर 2025 को लंदन से जापान जा रही थीं। शंघाई के पुदोंग एयरपोर्ट पर उनका ट्रांजिट था, जो सिर्फ तीन घंटे का होना चाहिए था। लेकिन चीनी इमिग्रेशन अधिकारियों ने उन्हें लाइन से अलग कर लिया। उन्होंने पेमा का पासपोर्ट देखा और कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का हिस्सा नहीं है। अधिकारियों ने उनकी हंसी उड़ाई, कहा कि आप चीनी हैं, भारतीय नहीं। उन्होंने सुझाव दिया कि चीनी पासपोर्ट के लिए आवेदन करें। पेमा ने बताया कि यह सब बहुत अपमानजनक था। उन्हें खाना, पानी तक नसीब नहीं हुआ। 18 घंटे तक वे एयरपोर्ट पर ही अटकी रहीं। आखिरकार, भारत के शंघाई और बीजिंग में दूतावास के अधिकारियों ने हस्तक्षेप किया। तब जाकर उन्हें जापान के लिए फ्लाइट मिली। पेमा ने कहा कि यह सिर्फ उनकी व्यक्तिगत परेशानी नहीं, बल्कि पूरे देश की गरिमा का सवाल है। वे अरुणाचल से हैं, जो भारत का अभिन्न अंग है। इस घटना ने सोशल मीडिया पर हंगामा मचा दिया। कई लोगों ने पेमा का समर्थन किया, जबकि कुछ ने ट्रोलिंग की। पेमा ने जवाब दिया कि हम एक राष्ट्र हैं, और सरकार का हर कदम सबके फायदे के लिए है। यह वाक्या दिखाता है कि सीमा विवाद कैसे आम लोगों की जिंदगी को प्रभावित करता है। पेमा जैसी महिलाएं विदेश में सुरक्षित महसूस करना चाहती हैं, लेकिन राजनीतिक तनाव उनके रास्ते में बाधा बन जाता है। यह घटना हमें सोचने पर मजबूर करती है कि अंतरराष्ट्रीय यात्रा में नागरिकों की सुरक्षा कैसे सुनिश्चित की जाए। कुल मिलाकर, यह एक छोटी सी घटना लगती है, लेकिन इसके पीछे गहरे मुद्दे छिपे हैं, जो भारत और चीन के बीच विश्वास की कमी को उजागर करते हैं।

भारत का सख्त संदेश: अरुणाचल हमारा अभिन्न हिस्सा

25 नवंबर 2025 को भारत ने चीन को कड़ा डिमार्श भेजा। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने कहा कि यह हिरासत पूरी तरह मनमानी थी। उन्होंने जोर देकर कहा कि अरुणाचल प्रदेश भारत का अभिन्न और अटूट हिस्सा है। यह कोई बहस का विषय नहीं, बल्कि एक स्पष्ट सच्चाई है। जायसवाल ने बताया कि चीन ने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया, जबकि यह अंतरराष्ट्रीय उड्डयन नियमों और चीन के अपने ट्रांजिट नियमों का उल्लंघन है। चीन 24 घंटे तक वीजा-मुक्त ट्रांजिट की अनुमति देता है, लेकिन यहां ऐसा नहीं हुआ। भारत ने दिल्ली में चीनी दूतावास और बीजिंग में विदेश मंत्रालय दोनों को शिकायत दर्ज कराई। अरुणाचल के मुख्यमंत्री पेमा खांडू ने इसे भारतीय नागरिकों की गरिमा पर हमला बताया। राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल केटी परनाइक और कानून मंत्री कंटो जिणी ने भी निंदा की। उन्होंने कहा कि चीन का यह पुराना तरीका अब चलेगा नहीं। सोशल मीडिया पर #ArunachalIsIndia ट्रेंड करने लगा। लोग सरकार के इस कदम की तारीफ कर रहे हैं। यह घटना भारत के लिए सिर्फ एक शिकायत नहीं, बल्कि संप्रभुता का प्रतीक है। जायसवाल ने चेतावनी दी कि

एयरपोर्ट पर 18 घंटे की कैद: एक महिला की व्यथा



ऐसी मनमानी कार्रवाइयां दोनों देशों के बीच विश्वास को नुकसान पहुंचाती हैं। पिछले एक साल से दोनों देश सीमा पर शांति बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं, लेकिन यह वाक्या उन प्रयासों पर पानी फेर देता है। भारत का रुख साफ है कि नागरिकों की सुरक्षा पहले। यह संदेश न सिर्फ चीन को, बल्कि दुनिया को भी जाता है कि भारत अपनी जमीन और लोगों की रक्षा के लिए हमेशा खड़ा रहेगा। कुल मिलाकर, भारत की यह प्रतिक्रिया मजबूत कूटनीति का उदाहरण है, जो शांतिपूर्ण लेकिन दृढ़ है।

चीन का साफ इनकार: कानून के मुताबिक सब कुछ

चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने सभी आरोपों को सिरे से नकार दिया। उन्होंने कहा कि इमिग्रेशन अधिकारियों ने पूरी प्रक्रिया कानून और नियमों के अनुसार की। पेमा के अधिकारों की पूरी रक्षा की गई, कोई जबरदस्ती या उत्पीड़न नहीं हुआ। माओ ने बताया कि एयरलाइन ने उन्हें आराम करने की जगह, खाना और पानी दिया। उन्होंने जोर देकर कहा कि कोई हिरासत या छेड़छाड़ नहीं हुई। लेकिन साथ ही, उन्होंने अरुणाचल पर अपना पुराना दावा दोहराया। कहा कि यह जंगलान या दक्षिण तिब्बत है, जो चीन का हिस्सा है। भारत द्वारा बनाया गया अरुणाचल प्रदेश नाम चीन कभी मान्यता नहीं देगा। माओ का यह बयान दिखाता है कि चीन अपनी स्थिति से पीछे नहीं हटेगा। उन्होंने कहा कि सीमा निरीक्षण में सभी को समान व्यवहार मिला। यह दावा भारत के लिए चुनौती है, क्योंकि यह नागरिकों के साथ राजनीति को जोड़ देता है। चीन का रुख हमेशा से सख्त रहा है, खासकर विवादित इलाकों से आने वालों के मामले में। लेकिन इस बार, यह एक साधारण ट्रांजिट पर हुआ, जो

सवाल उठाता है कि क्या चीन जानबूझकर तनाव बढ़ा रहा है। माओ ने अंतरराष्ट्रीय नियमों का हवाला दिया, लेकिन भारत का कहना है कि यही नियम तोड़े गए। यह टकराव दोनों पक्षों की दलीलों को सामने लाता है। चीन की तरफ से कोई माफी नहीं मांगी गई, न ही जांच का वादा। बल्कि, उन्होंने इसे सामान्य प्रक्रिया बताया। यह स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि दोनों देश कैसे आगे बढ़ें, जब बुनियादी मतभेद इतने गहरे हों। कुल मिलाकर, चीन का जवाब रक्षात्मक है, जो विवाद को सुलझाने की बजाय और उलझा देता है।

सीमा पर लंबी खींचतान: अतीत से वर्तमान तक

भारत और चीन के बीच अरुणाचल प्रदेश पर विवाद दशकों पुराना है। यह 3,440 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर स्थित है। चीन इसे दक्षिण तिब्बत मानता है, जबकि भारत इसे अपना अभिन्न राज्य। 1962 के युद्ध से लेकर आज तक, यह मुद्दा तनाव का कारण रहा। 2020 में गलवान घाटी में झड़प हुई, जिसमें सैनिक मारे गए। उसके बाद संबंधों में ठंडक आ गई। 2022 में तवांग में फिर टकराव हुआ। लेकिन पिछले साल से दोनों देश सामान्यीकरण की कोशिश कर रहे हैं। अक्टूबर 2024 से सीमा पर गश्त व्यवस्था पर सहमति बनी। हवाई सेवाएं फिर शुरू हुईं। अगस्त 2025 में चीनी विदेश मंत्री वांग यी ने दिल्ली आकर कहा कि पड़ोसी देशों को साझेदार मानना चाहिए, दुश्मन नहीं। लेकिन यह घटना उन प्रयासों को झटका देती है। विशेषज्ञ कहते हैं कि चीन की आक्रामक नीति भारत के नागरिकों को निशाना बनाती है। अरुणाचल के लोग अक्सर वीजा समस्याओं का शिकार होते हैं। भारत का मानना है कि

शांति और विश्वास सीमा क्षेत्रों में जरूरी है। यह वाक्या दिखाता है कि कूटनीति कितनी नाजुक है। एक तरफ बातचीत, दूसरी तरफ ऐसी घटनाएं। जनता में चिंता बढ़ रही है कि क्या सामान्यीकरण सिर्फ दिखावा है। अरुणाचल के निवासी विदेश यात्रा में सतर्क रहते हैं। यह विवाद न सिर्फ जमीन का, बल्कि पहचान का भी है। भारत की एकता पर सवाल उठाने जैसा। कुल मिलाकर, इतिहास हमें सिखाता है कि धैर्य और संवाद ही रास्ता है, लेकिन ऐसी घटनाएं सबको सतर्क कर देती हैं।

आगे की चुनौतियां: विश्वास कैसे बहाल हो

यह घटना भारत-चीन संबंधों के लिए एक सबक है। दोनों देश आर्थिक रूप से जुड़े हैं, लेकिन सीमा विवाद बाधा बनता है। पेमा की कहानी ने लोगों को सोचने पर मजबूर किया कि विदेश में भारतीयों की सुरक्षा कैसे हो। सोशल मीडिया पर समर्थन की बाढ़ आई, लेकिन ट्रोलर्स ने भी सवाल उठाए। पेमा ने कहा कि वे ऊंचे पद पर हैं, समय बर्बाद नहीं करेंगी। उनका संदेश एकता का था। सरकार को अब सतर्क कूटनीति अपनानी होगी। विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि नागरिकों के लिए द्वैल एडवाइजरी जारी करें। दोनों देशों को बातचीत बढ़ानी चाहिए। अरुणाचल जैसे मुद्दों पर संयुक्त समझ जरूरी। यह वाक्या दिखाता है कि छोटी घटनाएं बड़े संकट पैदा कर सकती हैं। भारत को अपनी स्थिति मजबूत रखनी है, लेकिन शांति के लिए दरवाजा खुला रखना चाहिए। चीन को भी समझना होगा कि ऐसी कार्रवाइयां विश्वास तोड़ती हैं। जनता में चिंता है कि क्या यह सिर्फ शुरुआत है। लेकिन उम्मीद है कि कूटनीति जीतेगी। कुल मिलाकर, यह समय सोचने का है कि कैसे हम मजबूत संबंध बनाएं, जहां हर नागरिक सुरक्षित हो।



प्रभु कृपा दुख निवारण समागम

BY

**Arihanta
Industries**

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML



**ULTIMATE
HAIR
SOLUTION**

NO

ARTIFICIAL
COLOR
FRAGRANCE
CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries